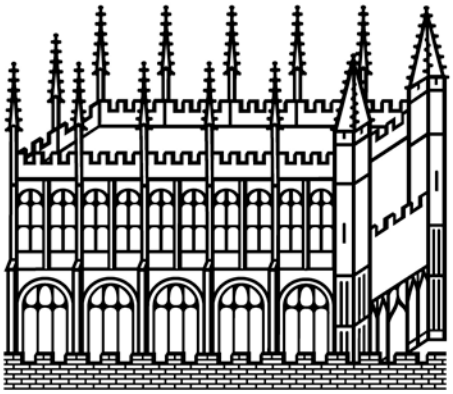

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi misc
B 132

43.C.34.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Gul o Sanaubar.

Goalsanaulee-Hindee

गुलसनोबर

قصہ گل و صنوبر

जिस्में

बारह कहानियों में रस और प्रेम की वार्त्ताओं का वृत्तान्त

भाषा और छन्द प्रबन्ध में वर्णन है

जिसको

रसरसिक विलासियों और प्रेमानुरागियों के

अनुरागार्थ

अवध देशीय बहराम घाट निवासी बाबू जीवाराम जाट ने

उर्दू से भाषा में उल्था किया

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापे ख़ाने में छापा गया

अगस्त सन् १८८१ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अगस्त सन् १८८१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	२ सभापर्व	तथा मोटे अक्षरोंकी	आनन्दरघुनन्दन
महाभारत	३ बनपर्व	मयतसवीरवक्षेपक	**वेदान्त**
१ पहिले हिस्सामें	४ विराटपर्व	रामायण तुलसीकृत	योगवाशिष्ठ
आदिपर्व सभापर्व	५ उद्योगपर्व	सातों काण्ड	आनंदामृतवर्षिणी
बनपर्व	६ भीष्मपर्व	१ बालकाण्ड	सारव्यतत्वकौमुदी
२ दूसरे हिस्सा में	७ द्रोणपर्व	२ अयोध्याकाण्ड	**काव्य**
विराटपर्व उद्योग	८ कर्णपर्व	३ आरण्यकाण्ड	सूरसागर
पर्व भीष्मपर्व द्रो-	९ शल्यपर्व व ग-	४ किष्किन्धाकांड	कृष्णसागर
ण पर्व	दा पर्व सौप्तिकपर्व	५ सुन्दरकाण्ड	विश्रामसागर
३ तीसरे हिस्सा में	मय योशिकव वि-	६ लंकाकाण्ड	प्रेमसागर
कर्णपर्व शल्यप-	शोकव स्त्रीपर्व	७ उत्तरकाण्ड	ब्रजविलास छोटा
र्व गदापर्व सौप्तिक	१० शान्तिपर्व राज	रामायण शब्दार्थको-	ब्रजविलास बड़ा
पर्व योशिकपर्व	धर्मव आपद धर्म	रामायणका इतिहास	कृष्णप्रिया
विशोकपर्व स्त्री	व मोक्ष धर्म व दा-	रामायणमानसदीपि-	विनयमुक्तावली
पर्व शान्तिपर्व में	न धर्म	रामायणकवितावली	अनेकार्थ
राजधर्म आपद ध-	११ अश्वमेधआश्र-	रामायणगीतावली	छन्दोर्णवपिंगल
र्म मोक्ष धर्म	मवासिकपर्व	सटीक	कविकुलकल्पतरु
४ चौथे हिस्सा में	व मौशल पर्व म-	विनयपत्रिकाबा-मो-	रसराज
शान्तिपर्व दानधर्म	हा प्रस्थान स्वर्गा	विनयपत्रिकाबा-शि-	सतसई मूल तथा स-
अश्वमेध आश्रम-	रोहण	लिंग पुराण भाषा	सभाविलास
वासिकपर्व व मौश-	१२ हरिवंशपर्व	विष्णुपुराण भाषा	तुलसी शब्दार्थ
लपर्व व महा प्रस्था	रामायण रामविलास	ब्रह्मोत्तर खंड भा-	भजनावली
न स्वर्गारोहण प-	रामायण तुलसीकृत	गरुड पुराण प्रेतक-	प्रेमरत्न
र्व हरिवंश पर्व	रामायण सटीक मय	गीतावली	युगलविलास
महाभारत पर्व अ-	मानसदीपिका कोष	**नाटक**	चित्रचन्द्रिका
लेहदा भी हैं	आदि	प्रबोधचन्द्रोदय	बारहमासाबलदे-
१ आदिपर्व	तथा जिल्दबंधी	रामाभिषेक	वप्रसाद

श्रीगणेशाय नमः

गुलसनोबर

अथ प्रथम

कहानी

प्रारम्भः

शमशाद लालपीश के बड़े पुत्र के अहेर अर्थात् शिकार को जाने औ
र जहांगीर बादशाह के मुख से महरंगेज़ नामक चंद्र बदनी के रू-
पकी प्रशंसा और उसका प्रश्न सुन उसके बिरह बश्य होने के बिषय में।

चौपाई

सुनियत नृपको भाग्य बिशाला। तख़्त सुलेमा योग्य नृपाला
कहूं तासुको न्याय बखानी। दास लीन नवशेर वहिं मानी
सत्य सत्य इमि बिदित नृपाला दारा सम ताके गृह पाला।
बीर ब्रती मन अति मनुसाई देखत सिंह किशोर पराई
दीप चन्द्रिका द्वार पुनीता। मित्र चित्त रहे नित नौ नीता
भाल तासु को जबहिं पेखिये। राका शशि दुति हीन देखिये
भाग्य बिभव परिपूरण ताई। देहि याचकन द्रव्य सुहाई।

निदान इस बादशाह के सात पुत्र थे जो सकल बिद्याओं में नि
पुण बिशेष कर युद्ध बिद्या में अति प्रबीण कि जिनको देख

करसेनाके समूह और व्यूह पलाय मानदोके और न्याय और देशके प्रबंध में तो अद्वितीय थे॥ एक दिन का यह वृत्तान्त है कि ज्येष्ठ पुत्र बादशाह के सन्मुख आय शीश नाय जयजीव कहि इसप्रकार प्रार्थना करनेलगा कि हे तात इस दास का मन अति मलीन रहता है जो आपकी आज्ञापाऊं तोकुछ। दिन घूमि फिर देशाटन करफिर आकर आपके चरणों के निकट हाजिर होऊं कदाचित् इस घूमने फिरने से चित्त। की उदासी जाय और मनका उच्चाटन दूर होवै॥

दो॰ मनमतंग माने नहीं कानन को अनुराय
केतिकसिखवअंकुशकरे ताहिननेक लखाय

यहसुनबादशाह ने उसकी बात अंगीकार की तबउसने शिकार करनेवालों और पहलवानोंको आज्ञादी कि बाज, शाहीन, शिकरा, बहरी, स्याहगोश, चीते, ताजी और। पहाड़ी जानवर जितने कि शिकार करतेहैं तैयार करो और आप बहुत से वीरों को जो शिकारकी आखेट में प्रवीरा और लौलीन थे साथलेके जहांपर कि शिकार आधिक्यता सेथा उधरकी ओर सिधारा, जबधीरे धीरे एक पर्वत के नीचे जो उंचाईमें सुमेर गिरिके समान था जा पहुंचा तब एक ऐसा विचित्र मनोहर मृग दृष्टि पड़ा कि जिसके देखतेही बादशाह ज़ादा आपही उसका शिकार बनगया और सम्पूरण आखेट कारोंको आज्ञादी कि देखो इस मृगपर कोई चोट मत चलाइयो यथासामर्थ्य इसको सजीवही जालमें फँसाइयो और जो कोई इसको सजीव पकड़ के मेरे पास लावेगा उसको पारितोषिक से परिपूरण करूंगा इसभांति सबको सचेत कर आपभी उसके फंसाने की।

यत्न में लगा जब मृगाने देखा कि चारों ओर से भागने की राह बन्द होती जाती है और आलस्य अवश्य जीवका घात किया चाहतीहै तब उसने ऐसी चौकड़ी भरी कि जाल से अलग निकल गया और उछलते कूदते बनकी राहली यह देख शाहज़ादेने भी उस के पीछे अपना घोड़ा डाला और मृगके ऊपर दृष्टि लगाये चलाही गया निदान जब अपनी सेनासे बहुत दूर निकल गया और दोपहर होगया तब मारे उत्पातके शरीर पसीना से डूब गया और मारे तृषा के कण्ठ में कांटे पड़गये परंतु मृगका पीछा न छोड़ा इतने में अचानक एक बालूका टीला दृष्टि पड़ा तिसपर हिरण को। चढ़ते देखापर वहीं से वह हिरण दृष्टि से लोपहोगया फिर बार शाह ज़ादे ने बहुतेरा घोड़ा दौड़ाया परंतु वह मृग दृष्टि न आया केवल शाहज़ादा उस बिकट बनमें रह गया तब मारे भूख प्यास और गरमी के घोड़ा अति विकल होगया तो बादशाह ज़ादा उस की बाग़ डोर पकड़ के आगे बढ़ा थोड़ीही दूरमें घोड़ा तो पृथ्वीपर गिरपड़ा और सरा मात्र में मरगया बादशाह ज़ादा अकेला रोदन करता हुआआगेको चला थोड़ी दूर चलके एक ऊंचाई दृष्टि पड़ी तिस्पै चढ़के देखातो एक वृक्ष ऐसा ऊंचादेखा कि जिस की जड़ पाताल शिर आकाश और कन्धा उसके चारोंदिशाओंको ढकेहुये हैं और उसके नीचे एक झरनपानीका कि जिसकी स्वच्छता कीउपमा के योग्य केवल अमृत और मिठास के लिये मिश्री और उसके आस पास की हरियाली को देख शुक पंख लज्जित होतेथे यह देख बहुत हर्षित हुआनिदान ज्यों त्यों कर वहां पहुंचा और दो चार चुल्लू पानी पीकर चित्त संतुष्ट किया फिर परमेश्वर का धन्य वाद किया इतने में अचानक एक सिंहासन बादशाहों

के योग्य भरा हुआ दृष्टि पड़ा यह देखके बहुत विस्मित हुआ और इसी शोच में था कि इतने में एक मनुष्य सिड़ी के भांति आता दृष्टि पड़ा जिसके चेहरे से सिद्धाई और बड़प्पन के चिन्ह विदित होते थे इसने देखके जाना कि कदाचित कोई ऋषि अथवा तपस्वी है जब निकट आया तो उसने पूँछा कि हे जवान तू ऐसे बिकट बन में। कि जहां मनुष्य की तो कौन चलावै कोई पशु पक्षी भी नहीं कौन है क्या तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है तब बादशाह ज़ादे ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त उससे कहके पूँछा कि तुम कौन हो कहां के निवासी हो और ऐसी दशा से इस बन में बसने का क्या कारण है सो कृपा करके कहो यह सुनके उस सिड़ी ने कहा कि हे प्यारे मेरा समाचार न पूँछ क्योंकि मेरा वृत्तान्त कहने को तो क्या बरन सुनने के भी योग्य नहीं है और जो मैं कहूं तो यह निश्चय है कि दुखभीमा रे दुःख के बिकल होके रोने ही लगोगा और मेरे चित्त से जो दुःख की अग्नि का ज्वाला उठेगा तो मुझे महा कष्ट होगा परंतु जब शाहज़ादा उसके पीछे ही पड़ा और उसने सत्य कहने के सिवाय अपना बचाव किसी प्रकार न देखा तब कहने लगा कि तू एक क्षण मेरे पास बैठ तो मैं अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहता हूं तू सुन ले कि जहांगीर शाह मेरा नाम है मेरे धन दौलत इतनी है कि जिसकी गणना नहीं राज्य निर्विघ्न और सात पुत्र परमात्मा ने मुझे सुशील और स्वरूपवान दिये थे ऐसे सुखसे दिन काटता था कि दुःख शब्द का अर्थ भी न जानता था एक दिनका यह वृत्तान्त है कि बड़े पुत्र ने किसी पथिक से सुना कि चीन और तुर्किस्तान की सीवां पर तैमूस के पुत्र क़य मूस शाह की पुत्री ऐसी है कि जिसके मुखको देख चंद्रमा मारे लाज के प्रति दिन।

घटने लगा और सारे शोकके मुखपर श्यामता छागई चोटी। की श्यामताई को निरख नागिनि केंचुलि छोड़ि बांबीमें सटक गई कराढ की गुलाई निरख कपोत कल मलाने लगा ग्रीवों। की चपलता को देख मीन जलमें पड़ी मृगी ने बन बास लिया ओ-ठों की लाली लख बिम्बफल लज्जित हुआ नासिका को निरख तिल फूलने मुख छिपाया कटिकी क्षीणता को देख केहरिने बन बास किया जाँघोंकी चिकनाई को देख केलाने कपूर खाया ऐ-सी वह नौयौबना है कि जिसने इन सबों की शोभा हीन किया के वल अद्वैत देशमें है॥

छन्द

यह रूप अनूप लख्यो जबसे। शशि पून्यो को छीनभयो तबसे
कहुं बोलत कोकिल शब्द सुन्यो तेहि कासरा कानन शीश धुन्यो
जब दाड़िम दन्त की पंक्ति लखी। नहिं हीयो उधारत लाज रखी
काटि केहरि ताकत नागरि को। निज बास कियो हठि कानन को
लखि ओठकी लालीको बिम्बलजै गल गोल निहारि कपोत भजै
मृग मीन निहारत नयन सदा बन नीरतको कवि कहत मुदा
ये मूढ़ न जानत सत्य यथा। बकि दादुर खोयो जन्म वृथा
यह रूप प्रत्यक्ष धनन्तर को। जेहि वारके नयन उधारितको
चट मृतक शरीरमें प्राण बस्यो। जाको लट नागिनि कासि डस्यो

निदान उसके सिवाय और कोई स्वरूप वान स्त्री नहीं है और जबसे वह नौ यौबना युवा भई तभी से देश देश के राज कुमार उसके साथ वि-वाह करने की इच्छासे आते हैं परंतु आजतक किसी के हाथ नहीं ल-गी क्योंकि उसने एक प्रश्न ठीं अपना दहेज निबंध नियत किया है सो यह है कि गुलने सनोवर के साथ क्या किया जो कोई इस प्रश्न का।

उत्तर देगा उसीको अपना पति अंगीकार करके विवाह करेगी हे ज-
वान यह समाचार जब उस पथिकसे सुना उसी समय से उसके बि-
रहमें बिन देखेभाले आशक्त होगया और मेरेपास आके रोया।
और उसके पास बिवाह की इच्छासे जानेके लिये बिदा मांगनेल-
गा मैंने उसे बहुतेरा समझाया परंतु मेरी शिक्षाकी औषधि उसबि-
रह के रोगी को कुछ फलदायक न हुई बरण बिरह औरभी दूनी हु-
ई यह दशा देख मैंने उससे कहा कि जो तुझे उसके साथ सुख बि-
हार करने की इच्छा है तौ मैं निजसेना लेके रूम को जाताहूं जो वहां।
काबादशाह अपनी बेटीको हंसी खुशी मेरे साथ करदेगा तौ तौ।
भली भला है नहींतो उसको जीत उसकी बेटीको ले आऊंगा वह
सुनके बादशाह ज़ादेने कहा कि हे तात अपने स्वारथ के लिये दूसरे
को दुखदेना अथवा किसी के देशको माटीमें मिलाना अत्यन्त।
अनुचित है इसलिये मैं आपही वहां जाकर उसके प्रश्नका उत्तर
दे उसका बिवाह कर फिर आपके चरणों में हाज़िरहूंगा हे जवान क-
हावत यह प्रसिद्ध है कि (करम रेख ना मिटै करै कोई लाखों चतुरा-
ई) क्योंकि जो कुछ छठीके दिन भावी ने भालमें लिखाहै सो अमिट
है उसमें किसी प्रकार ब्यतिरेक नहींहोसक्ता उसकी प्रारब्धमें तो
योंहीं लिखाथा वह भला मेरी शिक्षा काहेको कानकरने लगा निदान
मैंने उसे जाने की आज्ञादी शाहज़ादा मुझसे बिदाहोकर उसके देशमें
पहुंचा वहां जब प्रश्नका उत्तर नदेसका तब महरंगेज़ने अपनेकहने के।
अनुसार उसका शिरकाटके अपनेकोटके कंगूरों पर लटकवाया जब य-
ह समाचार मुझे मिला तब मैं काले वस्त्र धारण कर शोकभवन में
आबैठा और महल में विलापहोने लगा इष्ट मित्रजिनने थे सो सब
अधीर होगये और दूसरे भाई उसके शोकमें बावरे से बन रोनेपीटने

लगे जब उसका छोटा भाई शोक समुद्र का झकोरा न सँभाल सका तो उसनेभी महरंगेज़से मिलनेका मनमें विचार किया अंतको वहभी अपने बड़े भाई की भांति जीवसे हाथ धोय बैठा निदान इसीभांति। मेरे सातों पुत्र उस कुटिलके हाथ मारेगये और कि सीसे उसके प्रश्न। का उत्तर न बन आया उस दिनसे मैं अपने पुत्रोंके शोक से राज पाट छो। ड़ इस बिकट बनमें मारामारा फिरताहूं क्याकरूं मनको बहुतेरा सम झाताहूं परंतु माता पिताकी डाह नहीं बुझती अब मुझे जीना अच्छा नहीं लगता पर मांगे मृत्युभी नहीं मिलती हे पथिक मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्त यहहै जिसकारण मैं बावरा सा इसबनमें फिरताहूं ज्योंहीं शाहज़ा देने उसबावरे के मुखसे यह वृत्तान्तसुना त्योंहीं उसके बिरहमें आशक्त हुआ॥

चौ॰ मन मतंग नहिं अंकुश माने । सपदि मूढ़ बनहीं को ताने॥
बिह्वल भयो कहत नहिं बनै । को शिक्षक समझावे मनै॥
कहा करूं कैसे दुख मेटों । केहि बिधि वाको भुजभरिभेटों
कोई वैद्य दृष्टि नहिं आवे । जोया गद की औषधि लावे॥
येहिकुरोग की औषधि नाहीं। देख्योंकरि विचार मनमाहीं।
बिन देखे वह रूप सलोना । सुख सम्पति सब अधिकअलोना

दो॰ कहा करूं मन मूढ़ को नहिं मानत सिख एक
बिन देखे वा कुटिलको तजै न अपनी टेक॥

दूसरी कहानी

शाहज़ादे के शिकार से फिरने और बादशाह को उस-के बिरह के समाचार मिलने और शाहज़ादे को महरंगेज़ के पास जाने और प्रश्नका उत्तम न दे-ने के कारण वध किये जाने के विषय में॥

निदान इतमें सेना के मनुष्य जो पीछे रह गये थे सो चारों ओर से आ इकट्ठे होगये और एक बाजी जिसे बायु देख लज्जित हो मन के बेग सेभी आगे जानेवाला शाहज़ादे की सवारी के लिये लाकर खड़ा किया शाहज़ादा सवार होकर अपने घर आया परंतु महरंगेज़ के बिरह का बिषमज्वर जो उसकी रग रग में ब्याप्त होगया था उसी रोगके कारण दिन दिन मन मलीन तन क्षीण बिरह पीन होता जाता था निदान यह भेद सब छोटे बड़ेको बिदित हुआ और बादशाह ज़ादा बिरह के बनिजमें ब्योपारी ठहराया गया जो नौकर चाकर निशदिन सेवामें लौलीन रहते थे सो शाहज़ादेके समाचार। बादशाह से कहने लगे कि महाराज महरंगेज़ नामक स्त्री जो शाह कैमूसकी बेटी है उसके बिरह में शाहज़ादा अति अधीर हो लाज छोड़ बैठा है यह सुनके बादशाह ने आज्ञादी कि मेरी आज्ञानुसार एक पत्र महरंगेज़ के भेज देने के लिये उस बादशाह को लिख एक दूतको दे उसके साथ बहुतसे ऊंटोंपर देश देश की अपूर्ब अनोखी अधिक मौलिक बस्तु बादशाहों के योग्य भेजी जावैं जो इस बात को मान मेरी याचना पूरी करी तो यह सर्वोपरि है नहीं तो सेना लेके उसके देशको मटिया मेटकर उस कुटिलको ले आऊंगा जब शाहज़ादेने बादशाहकी यह सम्मति सुनी तब प्रार्थना की। कि यह अनीति उचित नहीं है मैं आपही वहां जाकर उसके प्रश्नका उत्तर दे थोड़ेही दिनोंमें उसे अपने साथ ले फिर आय आपके चरण स्पर्श करताहूं आप मुझे केवल वहां जानेकी आज्ञादीजिये। यह सुन बादशाह के मंत्री और सभा सद बोले कि महाराज ऐसी जगह तो शाहज़ादेका अकेला जाना हमारे निकट कुशल नहीं है कदाचित वह अपने बचनका प्रतिपालन करै तौ इसको बिराने

देशमें लज्जित होना पड़ैगा निदान उस बिरहीने मारे अभिमान के ऊंटोंपर बहुत से रत्न लदाय महरंगेज़ के देशकी राहली और थोड़ेही दिनोंमें कैमूसशाह के नगरमें जा पहुंचातो क्या देखता है कि एक बड़ा भारी कोट बनाहै और उसके प्रत्येक कंगूरोंपर अगणित शीश बादशाह और राजकुमारोंके लटके हैं यह दशा देख यद्यपि उसके साथियोंने बहुतेरा समझाया कि हे शाहज़ादे अभीतेरा कुछ बिगड़ा नहींहै महरंगेज़ के मिलने का संकल्प मनसे मिटादे और इस बिरहकी हाटमें अपने मरनेका व्यापार। मत कर क्योंकि तुझेतो मृत्यु के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा परंतु यह निश्चय है कि हमको पश्चाताप की मोट बांधनी पड़ैगी पर। शाहज़ादे ने उनकी बात न मानी और नगर की रचना देखता हुवा आगे बढ़ा तो बाज़ार में क्या देखता है कि बणिक लोग सम्पूर्ण पदार्थ लिये कुबेरकी भांति अति उत्तम उत्तम बस्त्र पहिने हुये दोनों ओर बैठे हैं निदान इसी भांति देखता हुआ राज द्वार में पहुंचा तो देखा कि एक रत्न जटित नक्कारा चोब सहित धराहै और उसपर सोनेके पानी से यह लिखा है कि जो कोई इस नगरमें। आय महरंगेज़ को देखना चाहे सो इस नक्कारे को बजावै इसके। शब्दके साथही बजाने वाले को महरंगेज़ अपने पास बुला लेगी शाहज़ादा उसको पढ़तेही घोड़ा से उतर के दुंदुभी बजाने को उद्यत हुआ उस समय भी शाहज़ादेके साथी संगी उसके जीव बचाने लिये प्रार्त्थना करने लगे कि हे शाहज़ादे प्रथम हमको उचित है कि एक स्थान अपने ठहरनेका नियत करके फिर इस काम के करने का उद्योग करैं परंतु शाहज़ादे के हृदयमें बिरहकी अग्नि ऐसी प्रचण्डथी कि उसके साथियों के बचनका जल

उसको कुछभी शीतल न करसका बरंच थोड़े पानीके परनेसे औ
रभी अधिक प्रज्वलितहुई तब योंकहनेलगा किमैंकुछइस नगर में
रहनेको नहीं आयाहूं जो कहीं रहनें कीजगह ढूंढूं अपना कार्य्य
करके शीघ्र घरको लौटनाहै इस लिये उचित है कि अपने आने
के समाचार नगर में विदित करैं यह कह चोब उठाय नक्कारे पर
ऐसे बलसे मारी कि सब नगर निवासी चौकन्ने होगये बाद-
शाहने शब्द सुन कर प्रतिहारों को आज्ञादी कि दुंदुभी बजाने
वाले पुरुष को शीघ्र लावो प्रतिहार आज्ञापातेही दौड़े और
शाहज़ादेको शाहकैमूस के पास लेगये शाहकैमूस इसके रू-
पको देखके कहने लगा कि हे पुत्र तू क्योंपानी परभीत उठाने।
का अनुमान करताहै एकतो मेरी बेटीही अपने रूपके घमंड से
प्रश्न करतीहै तिसका उत्तर देनेवाला कोई आजतक न देखा स
बोंने अपना शिर कटाकर तभाषा देखा दूसरे तूभी हे पुत्र अया-
नो की भांति हठ करता है यह बात भलीनहीं है उचित यहहै कि
तू इस अनुमान को मनसे निकालदे निदान बादशाह कैमूसने
बहुतेरा कहा परशाहज़ादे ने एकभी कान न किया और कहने।
लगा किहे नीति रत सुझे इसी में सुख है क्योंकि ॥

चौ॰ मनहठ परयो न सिखवे सिखवाया। चहत वारि पर भीति उठाया॥

तब बादशाहने कहा कि प्रथम तो हमारा यह कामहै कि तेरी
पहुनाई करैं ततपश्चात् तेरे मन आवै सो कीजियो यह कह न्यो-
तेकी सम्पूर्ण सामान शाहज़ादेके पासभेजदी तिस पीछे आप
अपनी पटरानी गुलसुर्खबेराम को साथ ले अपनी बेटी महर-
गेज़ के पासजाकर इस प्रकार कहने लगा कि हे हत्यारी तैने।
यह क्या अपने चित्तमें ठानीहै कि हृष्ट राज कुमारोंकी हत्या

लेतीहै कि जिस पापका प्रायश्चित भी नहीं ईश्वरके आगे क्याउ-
त्तर देगी इससे उचितहै कि इस हठको छोड़दे देख खावर देश
का शाहज़ादा बहुत साधन लेके तेरे साथ बिवाह करने की अ-
भिलाषासे यहां तक आय पहुंचाहै इसको अपना पति बनाकर
अंगीकार कर अब तुझको माता पिताकी आज्ञा उल्लंघनक-
रना उचित नहींहै क्योंकि इसका भंग करना महा पापहै और।
जो तैंने प्रण किया है सो तो जो तू एक सहस्र बर्ष भी बैठी रहै
तौभी इस प्रश्नका उत्तर देने वाला न ठहरैगा निदान इसीभांति
उसकी माताभी उसे समझाती रही पर उस कठोर चित्तने अ-
पने वज्र रूपी हृदय को किंचित नर्म न किया और रूख करके
बोली कि हे माता यह तू क्या कहती है जो एक लाख बर्षतक मु-
झे कोई न मिलैगा तो बिवाह न करूंगी बरञ्च कुमारीही मरजा-
ऊंगी निदान जब सूर्य्य अस्त हुआ तब महरंगोज़ ने शाहज़ादेको
अपने मकानमें बुलवाके कहा कि हे शाहज़ादे मेराय ह प्रश्न है
कि गुलने सनोवरके साथ क्याकिया शाहज़ादेने कहा कि हृद-
यकी बात तो एकईश्वर को छोड़ के दूसरा कोई नहीं जानता जो
कोई एक झूंठी बात बनाके तेरेसन्मुख कहै तो वह क्योंकर प्र-
मारिणक हो सक्तीहै जब उस कुटिलने अपने प्रश्नका उत्तर न
पाया तो चाराडालको शिरकाटनेकी आज्ञादी उसने आज्ञा।
पातेही धड़पैसे कन्दुक समान शीश अलग उतार लिया और
कोटके कंगूरों पर लटकादिया जब यह समाचार बादशाह ला-
ल पोशको पहुंचा तब चालीस दिनतक शाहज़ादेके शोक में
राज काज छोड़ के बैठारहा फिरथोड़े दिन बीते उसका भाई।
कहमास भी मारे लाजके अपने पितासेबिदाहोकर महरंगोज़के

पासगया और उसी भांति वल्लभी बध किया गया ॥

तीसरी कहानी

इल्मासरुह बरख्या का महरंगोज़ के देशमें पहुंचना और उसके बाग मेंजाके सिड़ीबनमहरंगोज़ और दिलाराम के चित्तको चुरायके उससे बिदा होने के विषयमें॥

निदान इसी भांति शाहशाद लाल पोशके छवों पुत्र मारेग येजबसबसे छोटापुत्र जिसको इल्मासरुह बरख़ा कहतेथे केवल शेष रहा यहपुत्र अत्यन्त धीरवीर गम्भीर स्थिर प्रकृति और सब प्रकार की विद्याओंमें निपुण था इसने एकदिन अपने पिता को देखा कि अपने पुत्रों के स्मरण में रत्न जटित सिंहासन पर बैठा शोक समीरके झकोरा ले रहाहै और नेत्रोंसेमेघके सदृश जल बर्षाय बर्षाय हृदय केडाहके दावाको सींचताहै जब इसने बादशाहकी यह दशादेखी तब शीलयुत शीश नाय निकट आयइस भांति प्रार्थना करने लगा कि हे पिता कैमूसकी बेटी महरंगोज़ नेजो छः भाइयोंको वृथा बधकियाहै मैंभीजबतक उसे दराड न दूंगा तबतक मेरे मनकी अभिलाष पूरी न होगी इसलिये आपसे यही प्रार्थनाहै कि आप दयाकरके मुझे आज्ञा दीजिये जिसमें वहां जाकर जैसे बनेतैसे छल बल कर उसकुटिलको ब्याहि लाऊं यह सुन बादशाह लालपोश ने कहा कि हे पुत्र अबकेवल तूही आंखोंके सामने रहाहै सो क्या तूभी अपनाजी देने की सामान करताहै शाहज़ादेने उत्तर दिया कि हे पिता बड़ी लाजकी बातहै कि एक नीच स्त्रीके प्रश्नका उत्तर न बन आवै मैंतो जब तक अपने भाइयों का बदला उस नीच से न लेलूंगा तब तक सुखसे न सोऊंगा निदान ऐसी ऐसी

बातें कर पिताका समाधान किया और बिदा होकर महरंगेज़के देशमें आपहुंचा दो चार दिन में देखता भालता उसके नगरमें आबिराजा जब कोटके पास पहुंचा तब सैकड़ों शिर शाहज़ादों के कंगूरोंपर लटके देखे उनमें अपने भाइयों केभी शीश देखे तो उनको पहिंचानके बहुत रोया परबश न था देखकर रहगया फिर नगर के बाहर आया और किसी गांवमें एक किसान के घरगया और उस किसान की स्त्री जिसकी अवस्था एक सौ बीस बर्षकी थी परंतु उसने पुत्रका मुख नहीं देखाथा इसको देखके अति प्रसन्नहो इसको अपना स्वदत्त पुत्र बनाया शाहज़ादे ने वहांका रहना अंगीकार कर घोड़े कोतो घुड़शाल में बांधा और बहुत साधन उन दोनों स्त्री पुरुषों को दिया और कहा कि तुमको उचित है कि मेरे समाचार किसीपै बिदित न करो निदान शाहज़ादा रातकोतो वहां रहा सबेरा होतेही नवीन बस्त्र पहिन महरंगेज़के नगर में फिरने लगा और इसी शोचमेंथा कि इसके प्रश्नका उत्तर किस भांति दूं परकुछ भेद किसी से न खुला इसीभांति फिरते फिरते एक दिन यह शोचा कि किसीभांति महरंगेज़ को देखना चाहिये क्योंकि उस कुटिलके बिरह में सैकड़ों बादशाह और शाहज़ादे अपने जीवसे हाथ धोय के चले गयेहैं यही शोचता हुआ महरंगेज़के द्वारपर गया तो क्या देखता है कि एक बड़ा भारी वृक्ष द्वार पर लगा है और अनोखीही बनावटका द्वार बनाहै और कितने एक द्वार पाल शस्त्र लिये बर्त्तमानहैं इसने बहुतेरा चाहा कि भीतर जायं परंतुद्वारपालकों ने भीतर न जाने दिया तो अधिक बिकल होके कहने लगा कि कदाचित् यह वहीबाग़है ईश्वर चाहेतो यहांहीं मेरा मनोर्थ

सिद्ध होजाय यही शोचता था कि कोई ऐसी उपायहोती जि-
सके द्वारा बाग़के भीतर जाऊं यह विचार परमेश्वर की बन्द-
ना करने लगा कि हे जगत् पावन कोई यत्न ऐसी बता जिस्में
मेरा मनोर्थ सिद्धहो इतने में एक नहर दृष्टि पड़ी जिस्में।
होके बाहर से बाग़के भीतर पानीजाता था यह उसको देख
बहुत प्रसन्नहुआ और कपड़ा उतार पानी में डुब्बी मार जलके
प्रबाह के साथ बाग़के भीतर जा पहुंचा और वहां किसी।
कोने में बैठ अपने कपड़े सुखाये फिर बस्त्र पहन कर बाग़में
फिरने लगा कि जहां नाना बरणा के फूल फूले हैं और बर-
णा बरणा के पक्षी कोलाहलकर रहेहैं अधिक बड़ाई क-
हां तक करूं वह देखतेही बनता था कि जिसके आगेइन्द्र
के उपबन को कुछ समता नहींथी निदान शाहज़ादा घूम-
ता फिरता उस जगह जा पहुंचा कि जहां महरंगेज़ बैठीथी
शाहज़ादे ने जो दूरसे उसका स्वरूप देखा तो सत्य तो योंहै
कि ऐसा स्वरूप मनुष्यों मेंतो क्या परियोंमेभी किसी ने न
देखाहोगा उसके महल के आगे संगमरमरका फर्श उपमा
रहित बनाहुआ और एक हौज़ में जल भराहुआ कि जिसकी
स्वच्छता के आगे बिल्लौर लज्जित होताथा शाहज़ादा थो-
डी देरवहां ठहरा फिर जहांतहां बाग़में फिरने लगा जब सं-
ध्याहुई तब मालीसे कियके रात उसी बाग़ में काटी जब प्रा-
तःकालको सूर्य्योदय हुआ तब शाहज़ादा बावरा बनके बा-
ग़में फिरने लगा इतनेमें कितेक बारांगणा वहां फिरती दृ-
ष्टि पड़ीं और उसी जगह एक ठौर पारब्रह्म का बिछौना बि-
छाया हुआ देखा जिस्पै एक सिंहासन धरा है जिस्पै एक चंद्र-

मुखी पूर्णिमा के चन्द्रमा समान प्रकाशवान् बैठी है और बा-
लोंकी लटोंमें भंवर गुंजार कर रहेहैं शाहज़ादे ने अपनी बु
द्धिसे बिचारा कि होनहो यही महरंगेज़ है ईश्वरने इसको ऐ-
सा रूपकी राशि बनायाहै तो क्यों न इस राका शशि के मिल
ने को संसार का समुद्र उमड़े और रूपको देख मन क्यों न डामा डो-
ल होय यह इसी शोच में था कि इतने में एक स्त्री सोने का गि-
लास लेके हौज़से पानी लेने को आई और वहीं एक वृक्षकी
ओटमेंसे शाहज़ादा जो यह चरित्र देख रहा था उसकी पर।
छाईं जलमें देख वह स्त्री मारे डरके सहम गई तो हाथमेंसे
गिलास गिरगया और रोती हुई उलटे पावों फिर गई तो उ-
सकी यह दशा देख दूसरी सहेली उसको महरंगेज़ के पास
ले गई उसने पूंछा कि कहु प्यारी तेरी यह कौन दशा है उस।
स्त्रीने उत्तर दिया कि मैने किसीकी परछाईं जलमें देखीहै
कि ऐसा रूप देखने में नहीं आया है यह सुनके महरंगेज़ने ए-
क सखी को भेजा कि उसको देखकर मेरे पास शीघ्रही आ।
वहजो जाके देखे तो देखतेही मुर्छित होगई और शिथिल।
अंग नेत्रों से नीर भरे महरंगेज़के पास आय कहने लगी।
कि हे स्वामिन यह नहीं मालूम पड़ता है कि किसकी परछा-
ईं है पर हां इतना है कि मनको अपनी ओर आकरषण क-
र निजबश कियाहै यह सुनके महरंगेज़को देखनेकी अधि-
क अभिलाषा हुई और अपने सिंहासन से उठके हौज़पर आ-
ई और उस परछाईं को देख के मोहित होगई और अपनी।
धायको बुलाके कहने लगी कि यहां कोई चित्त चोरहै उसे ढूं-
ढ़के मेरे सन्मुख लाओ कि उसके बिना चित्त अतिही उदास

हैधाय उसकी आज्ञानुसार चारों ओर देखने लगी तो एक जगह दक्षोंकेकुंजमेंशाहज़ादे को पाया इसने धाय को देख के भागने का अनुमान किया परंतु भागने का सावकाश न देखा तो बावरा बनगया धायने आके पूंछा कितू कौनहै कि जोतू हमारी स्वामिन का चित्त चुराय एक कोने में छिपाहुआ बैठा है शाहज़ादा धायसे बावरों कीसी बातें करनेलगा धाय उसका हाथ पकड़के शाहज़ादी के पासलाई तो शाहज़ादी ने बहुतेरा पूंछा कितू कौनहै और कहांसे आयाहै शाहज़ादी उस चन्द्र मुखको देख चकोरके समान दृष्टि लगायेरह गई शाहज़ादीने बहुतेरा पूंछा कितूकौनहै और कहांसे आयाहै कहां जायगा शाहज़ादे ने बावरोंकी भांति प्रश्न और उत्तर और इस प्रकार की बातें करने लगा और कहने लगा कि मैं सुधावन्तहूं और मुझे किसीसे कौन प्रयोजन है और कहूं क्या हिरन तो बकरी होगया सारवनकी भैंस होगई रोटी का पहाड़ पानीकी बौछाड़से घुल गया पाले से मोम टिघलगया ऊंटको बिल्ली निगल गई छछूंदर ने बिल्ली को खालिया देखो मेढ़क उड़ेजातेहैं समुद्र जलाजाताहै निदान ऐसीही उलटी सुलटी बातें करने लगा यह सुनके महरंगेज कुढ़नेलगी कि हा बड़े खेदकी बातहै कि ऐसा स्वरूपवान् बावराहोजाय देखो इसजरठ ब्रम्हा के कर्तब सब उलटेही हैं कि सागरको खारी कल्पतरुको अफलचंद्रमाको कलंकी कियाहै निदान महरंगेज़ शाहज़ादा का स्वरूप देख अधीर होगई थी सबको बुलाके कहने लगी कि यह मनुष्य बावराहै कोई इसको न रोके जहां मनमाने तहां जावे और जो मांगे सो इसे दीजियो

(१६)

यह कहके अपनी सहेलियों को लेके अपने मकान को चली। और चलतीबेर शाहज़ादे से कहा कि हे बावरे इस स्थानसे कहीं न जाना जो तुझे चाहिये सो सब इसीजगह तुझको मिलेगा तब शाहज़ादा अपने मनमें कहने लगा कि अभी इस कुटिल से उस प्रश्नका उत्तर पूंछना भली बात नहीं है वरंच उसकी सहेली से जिसका नाम दिलाराम था जिसने प्रथमही मेरी परछाईं देखकेबावरीहुई और अबतक मेरे विरह में विकलहै उससे किसी ढबसे पूंछना उचित है निदान बहुतेरा शाहज़ादाने चाहा परंतु उससे पूंछने का सावकाश नहीं मिलता था कि जिसमें उससे पूंछें दैव योगसे एक दिन दिलाराम शाहज़ादेको अकेला पायके उसके पावों पर शीश धरके बड़ी आधीनतासे कहने लगी कि हे प्यारे तुझको जो ईश्वरने रूप राशि दीहै तो मैंभी विरह दरिद्रता वश तुझसे भीख मांगती हूं कि मेरे मनकी अभिलाष पूरी करो और अपने भेदसे सचेत करो कि तू कौन है और यहां किसभांति आयाहै इसके पूंछने से मेराय ह प्रयोजन है कि तेरे रूपकी गांसी ने मेरे मन मृगको ऐसा घायल कियाहै कि अब तुझमें समझने की सामर्थ्य नहीं है इसलिये मेरी यह प्रार्थना है कि तू मुझे अपने साथ लेचलतोमैं अपनेसाथइतनाधन लेचलूंगी जिसके आगे कुबेर की सम्पतिभी थोड़ीहै यद्यपि दिलाराम इस प्रकारकी बातें करती थी। तद्यपिशाहज़ादा मारेडरके कि ऐसा नहो इस भेदके खुलनेपैकोई आपदा भोगनी पड़े बावरोंकी सी बातें करता था शाहज़ादे की यह दशादेख दिलाराम अधिक शोचकरने लगी और रातको ज्यों त्यों कर काटी पर सवेरा होतेही फिर भंवर समान उसके कमल

रूपी सुखार बिन्द मकरन्द के स्वादकी आशावान हुई इतनेमें महरंगेज़ ने शाहज़ादेको अपने सन्मुख बुलाया तो दिलाराम छिप छिपके शाहज़ादे का चंद्र मुख निरख निरख अपने नैन चकोरोंको सुखदेने लगी इस बातको महरंगेज़ जान गई तब दिलारामको अपने पास बुलाय के कहने लगी कि आज से इस बावरेकी सेवा में तेरे को सौंपती हूं इसको किसी बातकी तकलीफ़ न होने पावे यह सुनके दिलाराम बहुत प्रसन्न हुई और कहने लगी कि आपकी कृपासे इसकी मैं सब प्रकार सेवा करूंगी जब महरंगेज़ अपने घर गई तब दिलाराम शाहज़ादेको अपने घरमें लाय दो चार बातें मन लगनेके लिये करफिर ईश्वरकी सौगंद देके कहा कि अबजो तू ईश्वर को मान्ताहै। तो मनका भेद मेरे सन्मुख कह तब शाहज़ादेने कहा कि अच्छा मेरा मुख्य प्रयोजन तो यह है कि सनोवर ने गुलके साथ क्याकिया जो तुझको इस प्रश्नका उत्तर मालूमहोतो बताजिसके लिये तेरी शाहज़ादी महरंगेज़ अनेक शाहज़ादों को इस्था हत्याले चुकीहै और मैंनेभी इसीलिये इतनी आपदाभोगीहै यह सुन दिलाराम बोली कि अच्छा जो तू मुझे अपनी पटरानी बनावे और सदा मान मुझे माना करे तो निस्संदेह जितना मैं जानतीहूं तुझे बताऊं यह सुन शाहज़ादा। बोला कि हे प्यारी जो तेरी सहायता से मेरी अभिलाष पूरी हुई तो सदातेरा कृतज्ञी रहूंगा और जो कहेगी सोकरूंगा जब शाहज़ादा बचन बन्द होचुका तब दिलाराम बोली कि हे प्यारे इसका यथार्थ भेद मुझेभी नहींमालूम कि सनोवर केसाथ क्याकिया परंतु इतनाही जान तीहूं कि महरंगेज़के तख़्त

के नीचे एक जंगी रहता है उसीने यह सम्पूर्ण वृत्तान्त महरंगेज़ को बताया और वह जंगी काफ़ से भाग के आयाहै इसलिये तुझे भी उचितहै कि शहर वा काफ़ की राहले नहींतो किसीभांति तुझ पै यह बिदित न होगा जब शाहज़ादे ने यह सुना तब प्रसन्न हुआ कि अबतो कुछ संतोष करना उचित है परमात्मा चाहेतो सम्पूर्ण भेद खुलही जायगा अभीतो आगे बहुत सी कठिनता है परंतु बीरलोग जिस कामके करनेका अनुमान करतेहैं उस्में जो कांटे भी होयंतो उसेभी फूलकरमानतेहैं इतनेमें जब दिलाराम ने शाहज़ादेको बहुत शोच गत देखा तब बोलीकि हे मित्र तू क्यों इतना शोचकरताहै जो तेरा अनुमान महरंगेज़ के मारने का होयतो रात्रीके समय सभामें मदिरा के प्याले के बदले में बिषका प्याला देदूं कि फिर किसी भांति नजगाये जागै यह सुनके शाहज़ादे ने कहा कि हे प्यारी ऐसे धोखे से मारके बदला लेना मनुसाई के बिपरीत है जब तक शहर वा काफ़ में जाके इस वृत्तान्तको नजानूंगा तब तक मुझे बिश्राम करना उचित नहींहै और मैं तेरे साथ बचन बन्द होताहूं जो ईश्वर चाहताहै तो इसको शोधके तेरे मनकी अभिलाष पूरीकरूंगा इसे तू निश्चय जानियो फिर दिलाराम से बिदाहोय उस किसानके पास आयके कहने लगा कि हे तात मैं बिदेश जानेका अनुमा करताहूं तुम मन से किसी बातकी चिन्ता मतकीजियो ॥

चौथी कहानी

शाहज़ादेका दिलाराम से बिदा होने और पीररोशन ज़मीरका शहर वा काफ़ की राह दिखाने और लतीफ़ा वानू के जादूकरके शाहज़ादेको हिरणाहोजाने के बिषयमें॥

इस कहानी कहनेवालेने इसभांतिसे कही है कि शाहज़ादा घोड़े पर सवार होके शहर के बाहर निकल शहर वाकाफ़ की ओर चला परन्तु यह नहीं जान्ता था कि शहर वाकाफ़ कहांहै और कौनसी राह में होके उस शहर को जाना चाहिये इसी शोचके मारे दिनप्रति हीन होताजाताथा अन्तको ऐसा बलही नहोगया कि घोड़े पर बैठनेकी सामर्थ्य नहीं रही तब घोड़े की बागडोर हाथमेंले पैदल चलने लगा इतनेमें एक अतिही वृद्ध पुरुष स्वेत दाढ़ी हरित वस्त्र धारणा किये हाथमें छड़ी लिये अचानक दृष्टि पड़ा शाहज़ादेने उसको देखके दण्डवत करी और उसनेभी आशीर्वाद देके पूंछा कि हे जवान तू कौन है और कहांसे आताहै और कहांजानेका विचारहै शाहज़ादे ने कहा मैं पथिकहूं और शहर वाकाफ़ को जानेका विचार है पर यह नहीं जान्ता कि वह शहर कहांहै और राह कौनसी है उस वृद्ध पुरुषने शाहज़ादेकी ओर देखके कहा कि हे जवान। तू इसराह में पांव मत धर क्योंकि यह बात अति कठिनहै जो सम्पूर्ण आयुर्बल इसी खोजमें बितादेगा तौभी पता नपावे। शाइसीभांति उस वृद्धने बहुतसी बातेंशिक्षाकीरीतिसे कहीं पर शाहज़ादेने एक न मानी तब उस वृद्धने पूंछा कि तुझको कौन ऐसी विपत्तिपड़ी जिसके दुःख के मारे जीव जानेकी कुछ मनमें नहीं धरता शाहज़ादेने उत्तर दिया कि हे स्वामी मुझे एक ऐसा कामहै कि जिसके बिनाकिये चित्त अति मलीनरहताहै इसलिये जो आप उस शहर की राह जान्ते होतो दयाकर के बतादीजिये पुराणकी बातहै जब उस वृद्धने देखा किसी भांति यह अपना हठ नहीं छोड़ता तब कहा कि हे जवान शहर वा

काफ़ काफ़ में है और वायुसे सम्बन्ध रखता है और जिन्न लोग। वहां निवास करते हैं जब तू शहरके बाहर पहुंचेगा तो एक दुराहा मिलेगा वहांसे तू दाहनी ओर की राह लीजियो बाईं ओर को भूलके न जाइयो और दिन रातकी राह मत जाइयो और जब प्रातः काल होगा तब तुझको एक मीनार दृष्टि आवेगा उस पर एक संग मरमरकी पट्टीमें जो कुछ लिखा है सोई कीजियो उसके बिपरीत न कीजियो शाहज़ादेने यह बात मानी और उस वृद्धको दराडवत कर आशीर्वादले बिदा हुआ और दिनरात के अंतरमें उस मीनार के पत्ते पर जा पहुंचा तो क्या देखता है कि उंचाई में सुमेर गिरिसे भी ऊंचा है तिसपै एक पट्टी संग मरमरकी जड़ी है और उसमें यह लिखा है कि पथिक को उचित है कि दाहिनी ओरकी राह अंगीकार करै तो आनन्द से कुशल पूर्वक शहर वा काफ़ में पहुंचेगा और जो बाईं ओरकी राहमें होके जायगा तो थोड़ी सी कठिनता है पर उससे शीघ्र पहुंचेगा और बीच राह ऐसी कठिन और भय दायक है कि किसीभांति सजीव बचनेका भरोसा नहीं परंतु उनदोनोंसे इस राहके द्वारा शीघ्र पहुंचेगा यह पढ़ परमेश्वर को दराडवत की और कहा कि जल थलमें केवल तूही रखवारा है मैं केवल तेरी सहायता के भरोसे पर इस कठिन राहसे चलता हूं

चौ॰ मैं अनाथ बिछुर्‍यों या बनमें। तो सम हितू और नहिं जग में
इष्ट मित्र नहिं बंधु गुसाईं। सबको सर्बदा तुहीं सहाईं।
कासों निज मनको दुख कहौं। ताप दुःख के निज तन दहौं॥
देखों सब बन कंटक भर्‍यो। तापर पांव जात नहिं धर्‍यो।
अगणित दुःख लखों प्रतिग्रामा तो बिन कौन संवारै कामा

निदान इसीभांति परमात्मा से आधीनता मांगकर एक मुट्ठी

धूल लेके अपने बदन पै छोड़ कहने लगा कि तूही अब मेरे वस्त्र और क-
फन है और घोड़ा पै चढ़ बीच की राहली एक रात दिन के पीछे एक बन ऐ-
सा दृष्टि पड़ा कि उस बन के वृक्ष मानों आसमान से बातें कर रहे
हैं और उस बन में एक बाग़ हरा भरा देखके शाहज़ादा उसी ओर
चला तो देखा कि उस बाग़ का द्वार संग मरमर से बना है और उ-
सके द्वार पर एक हब्शी ऐसा काला कि जिसको देख कोयल।
काक और भादों की रैन बिचारी हारी और श्यामता की परछा-
ईं से सम्पूर्ण बाग़ काला हो रहा है बैठा है और ऊपर को ओष्ट
नासिका से भी ऊंचा उठा है और नीचे को ठोढ़ी तक लटकता है
और एक चक्की के पाट के समान पत्थर जो तौल में सौ मन के।
लगभग होगा ढाल की तरह एक अनार के वृक्ष में लटका है।
और एक खड्ग कि तौल में पचास मन लोहे से अधिक ही होगा
दूसरे वृक्ष में लटकता है और वह कितने ही जंतुओं की खाल की
पहरे और एक आहनी जंजीर कि जिसकी प्रत्येक कड़ी में हाथी
झूमा करै कमर में बांधे द्वार से तकिया लगाये सोता हुआ देखा
शाहज़ादे ने उसके पास आके घोड़ा अपना बांधके परमेश्वर
का स्मरण करके बाग़ के भीतर चला वहां फिरता फिरता अ-
चानक एक चमन के पास आ निकला तो वहां की आयु अति
सुगंध दायक और वृक्ष बहुत सुहावन लगे और वहां बहुत से
हिरण चर रहे थे कि जिनके शींग रत्नों से जड़े हुये और ज़रबफ़त।
की झूलें उनके ऊपर पड़ी हुईं और उनके गले में रूमाल सोने के ता
रों से कढ़े हुए बँधे हैं निदान प्रत्येक हिरण ऐसा शोभाय मान
दृष्टि पड़ा कि जिसके देखन से भूख प्यास दूर हो जाय दृष्टि पड़े
शाहज़ादा यह देखके अति ही बिस्मित हुआ कि हे भगवान यह

क्या आश्चर्य्यहै कि इसबाग़में काईमाली और रखवाला दृष्टि
नहीं आता और जितने हिरण चररहेहैं सबके सब शाहज़ादे
को सुख और पावोंसे इशारह करते थे कि यहां न आ परन्तु शा-
हज़ादेने यह बात कुछ मनमें न धरी बरण मनमें बिचारा कि-
ये हिरण सुझे देखके कलोलें कररहेहैं निदान सैर करता हुआ
एक महलके पास पहुंचा कि जिसके आगे कैसर कामकानल
ज़ित होताथा और रंगा मेंजीमें अहैन तिसमें एक बैठक संग
मरमरकी बनीहुई तिस्मै फ़र्शी बिछाहुआथा शाहज़ादा एकम-
रोखा की राह से उसके भीतर गया तो देखा कि एक स्त्री ऐसीरू-
रूपवान सिंहासन पर बैठी है कि जिसके आगे पूर्णिमा का चंद्रमा
मुख छिपाताहै आँखोंकी ललाई चंचलाई को देख मृग मीन
खंजनादि बनबनभागे फिरतेहैं और एक दरीची के बाहर शीश
निकासे चारों ओर को देखरहीहै ज्योंहीं उसकी दृष्टि शाहज़ादे
पर पड़ी त्योंहीं लतीफावानू का अंग शिथिल होगया और अधी
रहीके अपनी धायको बुलाके कहा कि इस युवापुरुषको मेरेपा-
स लेआतो इससे पूंछूं कि यह कौनहै धाय आज्ञानुसार शाह-
ज़ादे के पास आके कहने लगी कि तुझको हमारी खामिन बु-
लातीहै यह सुनतेही शाहज़ादा उस धायके साथहोलिया वहां
जायके देखा तोजाना कि मानों अप्सरावती यहीहै कि जहांतहां
पाटम्बर के बिछोना बिछाये हैं और एकसिंहासन रत्नजटितध-
राहै तिस्पै लतीफावानू बैठीहै जबशाहज़ादा उसके पास पहुंचा
तबबड़ेहर्षसे आके उसने शाहज़ादेका हाथ पकड़के अपनेपास
बैठालके पूंछा कि हे प्यारे तूकौनहै और कैसे आया और कहांजा
नेका बिचारहै तब शाहज़ादे ने अपना आद्योपान्त वृत्तांत उस से

कह सुनाया तो लतीफ़ा वानू बोली कि हे जवान जो तू चाहे तो कैमू-
स शाहको उसकी बेटी महरंगेज़ समेत तेरे पास मंगवाटूं और
जो तेरे मनकी अभिलाष है सो सब पूरी करूंगी पर अब तू यह ध-
न्य मान कि परमात्माने तुझे यहां पहुंचाया और मुझसी चम्प-
क बदनी तुझे मिली तब शाहज़ादेने कहा कि यह तो सत्य है पर
इस बात पै तेरे साथ बचन बन्द होता हूं कि जबतक यह भेद जा-
न महरंगेज़ को घोड़ोंकी टाप के नीचे न खुंदवा डालूंगा तब तक।
सृष्टिका बिषय भोग मुझको बर्जित है हां जब इस काम से छुट्टी।
पाऊंगा तो निस्संदेह तेरे मनकी अभिलाष पूरी करूंगा निदान।
लतीफ़ावानू ने बहुतेरी उससे मीठी मीठी बातें की पर शाहज़ादे
ने अपनी हठ न छोड़ी तब उसने यह बात मन में शोची कि किसी भां-
ति इसको मदिरा पान कराऊं जिसमें इसकी मति भ्रष्ट हो तो म-
हरंगेज़की ओर से कुछ क्रोध शान्त हो और मेरी बात सुने उससे-
मय अपने मनकी अभिलाष पूरी करूं यह मनमें बिचार मदिरा
मांगा और प्याला भर शाहज़ादे को दिया शाहज़ादे ने कहा कि
प्रथम यह आपको पीना उचित है फिर मैं पीऊंगा लतीफ़ावानू
ने शाहज़ादेके कहनेसे मदिराका प्याला अपने ओष्ठों से लगा-
य दूसरा प्याला भरके शाहज़ादेको दिया उसने उसे पी लिया फि-
र गाने बजाने का आरंभ हुआ और ऐसी ऐसी मीठी ताने सुनाने।
लगे कि उस समय जो बैजू बावरा होता तो बावरा होजाता और
तानसेन अपनी तानको भूलजाता निदान ऐसी सभा बन पड़ी कि
सम्पूर्ण मकान गूंजने लगा और जितने सभा में बालो वृद्ध थे सब
का मन मोह गया ऐसी दशा में लतीफा वान को काम ने और भी
अधिक सताया पर शाहज़ादे से कुछ बश न था तीन दिन तक इसी

भांति सभामें बैठा मदिरा पान करता रहा चौथे दिन शाहज़ादा उ-
ठके लतीफ़ावानू से कहने लगा कि अब दयाकरके मुझे विदा
कीजिये क्योंकि मुझे बहुत दूर जानाहै और तेरी प्रीतिकी रस्सी
में मैंतो बंधाहीहूं ईश्वरकी कृपासे जब मैं अपना काम करचुकूं
गा तो तेरी अभिलाष पूरी करूंगा जब लतीफ़ावानूने देखा कि-
शाहज़ादा किसी भांति मेरे फंदेमें नहीं आता तब अपनी धाय
से कहा उस तारुमें से वह माजूमलैआ कि जिसके खानेसे चि-
त्त प्रसन्न और लतीफ़ा पुष्ट होताहै थोड़ीसी शाहज़ादेको खि
लाऊं धाय आज्ञा पातेही लै आई लतीफ़ावानूने थोड़ीसी उसमेंसे
शाहज़ादेको दी शाहज़ादेने ज्योंहीं खाया कि अचेत हो गया तब
लतीफ़ावानू ने एक लकड़ी मंत्र पढ़के शाहज़ादेके कंधोंपर ऐसी
मारी कि शाहज़ादा चिल्लाने लगा और घूमके गिर पड़ा थोडीदे
रमें शाहज़ादा हिरण होगया तब लतीफ़ावानू ने सोनार कोबु-
लायके उसके सींगों में सिंगोटी जड़वाई और एक रूमाल जादू प-
ढ़के उसके सींगों में बांध दिया और ऊपर फूल उड़ाके उन्हीं हिर
णोंकी ओर कोहांक दिया यद्यपि शाहज़ादा हिरण बन गया।
था परंतु बुद्धि और स्वभाव उसी भांतिका बनारहा जब अपनेको।
हिरण के स्वरूपमें देखा तब मनमें कहनेलगा कि हे भगवान यह।
बीचमें तैंने कौन आपदा में डालाहै हाय अब दृथा जीव गयाको।
कि न तो अब कोई यत्न इसबाग़से बाहर निकलने की दृष्टि।
पड़तीहै और जो निकलाभी तो बाघचीताही खायजायगा निदान कि-
सीभांति अब छुटकारा न मिलेगा इसीभांति शोचताहुआ उन्हीं हिरणों
के झुंडमें जा मिला॥

पाँचवीं कहानी

जमीला खातूं की दयासे शाहज़ादे को पूर्व स्वरूप मिलने और जमीला खातूं से तीर कमान और अकरब सुलेमानी लेके बिदा होने और राह में बाघसे मिलने और मैदान सफ़ा में पहुंचने और शाहज़ादे की विरह में जमीला ख़ातूं के विकल होने के विषय में॥

निदान इसी शोच में बाग़ में चरता फिरता था कि इतने में दश-बारह दिन बीते तो एक दिन फिरता फिरता एक और बाग़ में जा निकला तो बाग़ की भीति वहां पर नीची देखी तो बाग़ से निकलने के अनुमान से उछल के बाहर आया पर जब देखा तो उसी ठौर पै अपने को देखा इसी भांति कितने एक बेर कूदा परंतु बाग़ ही में रहा तब मन में शोचा कि कदाचित यह बाग़ भी माया के परपंच से बना है इसी कारण से बाहर नहीं जा सक्ता अन्त को हार के एक ओर को चला तो उसमें एक क्यारी ऐसी देखी कि जिस्में पहुंचते ही मारे सुगंध के चित्त प्रसन्न होगया वहां धीरे धीरे कुछ दूर चलके एक भारी बाग़ दृष्टि पड़ा उसमें से बड़े परिश्रम से बाहर निकला तो दूसरा बाग़ दृष्टि पड़ा कि जिस में अनेक प्रकार के सुगंध दायक वृक्ष लगे हुए दृष्टि पड़े यह देखता हुआ आगे बढ़ा तो एक मकान बड़ा भारी दृष्टि पड़ा कि जिसमें हज़ारों खिड़की लगी थीं परंतु सब बन्द ही देखीं और प्रत्येक क्यारी उस बाग़ की देखने में इन्द्र की फुलवाई के सदृश थीं शाहज़ादा यह शोचता था कि देखिये परमात्मा यहां क्या दिखाता है फिर आगे बढ़ा तो एक खिड़की खुली हुई देखी कि जिसमें एक चंद्र मुखी रत्न जटित सिंहासन पर बैठी उस खिड़की में मुखानिका ले बाग़ की शोभा को देख रही है कि जिसकी शोभा से सम्पूर्ण बाग़ जग मगा रहा है और केशों की सुगंध

के लोभसे भृंग गूंजि रहेहैं इतने में उस चंद्रमुखी की दृष्टि अचा-
नक इसपर पड़ी तबतो यह अपने मनमें ऐसा डरा कि कहीं इस
के पास कुत्ता बैठाहो तो मेरी मृत्यु होजावै इसी शोचमें था कि ज-
ब उस चंद्रमुखी ने कि जिसका नाम जमीला खातूं था इस हिर-
णके सींगोंमें रत्न जड़े हुए देखे तो जाना कि कदाचित् यह हि-
रण किसीका पालतू है आंख बचायके भाग आयाहै इसको कि-
सी ढबसे पकड़ना चाहिये यह शोचके अपनी धाय को बुलाके इ-
सहिरणके पकड़नेकी आज्ञादी वह हरी घासलेके उसको दिखाने।
लगी इसको तो फसना थाही भूखे पशुवोंकी भांति उसकी ओर
को चला जब निकट आया तो धायने उस के गलेकी डोरी पकड़के
जमीलाखातूं के पास लैगई वह उसको देख मकानसे उतरके उस
के पास आई और जड़ाऊ भंवर कली और रेशमकी डोरी उसके ग-
लेमें देखके समझी कि यह हिरण किसी धनाढ्य का है वहां से।
छूटके भाग आयाहै निदान ज़मीलाखातूं उस हिरण की डोर पक-
ड़के अपने घरमें ले आई और अपने बैठका में उसे बैठाल के अच्छे २
मेवा उसके आगे धरे इसने मारे भूखके पेट भरके खाया और पानी
पीके भली भांति तृप्त हुआ और अपना शीश जमीलाखातूं की जां-
घ पर धरके सोने लगा तो वह चंद्रमुखी भी उसकी डिठाई से प्रस-
न्न हुई और अपना कमल साहाथ उसके ऊपर फेरने लगी फिर।
अपनी धायसे कहा कि एक रेशमकी डोरी लेआ वह आज्ञा पातेही
डोरी ले आई तब उस डोरीमें हिरण को अपने सिंहासनके पाये में
इस बिचारसे बांधा कि जिसमें सोते समय अलग न हो इतनेमें एक
सँग उसके आंखों से आंसू बहने लगे तो धायने जमीलाखातूं से।
कहा कि आपका हिरण रोताहै देखो बड़े आश्चर्य्यकी बात है कि

पशु इसप्रकार से रोदन करताहै यह नईबात सुनजमीला ख़ातूं चटसे हिरण के पास आई तब हिरण खातूंके पावोंपर शीश रखके औरभी अधिक रोने लगा तबखातूं उसके ऊपर हाथ फेर के कहने लगी कि हे प्यारे तू क्योंरोताहै मैंतो तुझे अपने प्राणों सेभी अधिक चाहतीहूं तबतोवह औरभी शीश उसके पैरोंपर धरके रोने लगा तबउसने अपनीबुद्धि सेजाना कि यह काम लतीफ़ाकाहै कि वह बहुधा मनुष्योंको पशू बनाके बन्दमें राखतीहै यह बिचार कर कहा कि अच्छा अबतू मतरो मैं अभी तुझे मनुष्य बनाये देतीहूं यह कहके धायको आज्ञादी कि ताख़ मेंसे माजूमका डिब्बा उठाला वह आज्ञा पातेही डिब्बा उठालाई तब जमीलाखातूंने स्नान करके नबीन बस्त्र पहरे और उस हिरण को भी स्नान कराये और थोड़ी सी माजूम उसमेंसे हिरण को दी वह खातेही अचेत होगया तब उसने एक छड़ी अपने तकिये के नीचेसे निकाल जादू पढ़के उसके कंधेपर मारी हिरण चक्कर खाके गिर पड़ा और लोट पोट मनुष्य होगया और जड़ाऊ सींग और रूमाल जो रत्नादिकों से जड़ेथे वे अलग होगये तब शाहज़ादेने परमात्माको बारम्बार धन्य बाद किया और जमीला खातूं से कहने लगा कि तेरी दया से अब मनुष्य हुआहूं न तो मेरी सामर्थ्य इतनीहै कि तेरी बड़ाई करूं और न कोई पलटा मेरे पासहै परंतु हां तेरा ऋणी रहूंगा तब जमीला ख़ातूं ने शाहज़ादे को राजसी बस्त्र पहनाये तो शाहज़ादेका रूप ऐसा चमका कि मानों शशि भूतल में आय बिराजाहै जमीला खातूं देखके शाहज़ादेके रूपपै बावरी हो गई और मारे प्यारके उससे सब हाल पूंछने लगी कि तुम कौन हौ और कहां से आतेहौ और क्या नाम है

और यहां आनेका कौन हेतु है और लतीफावानू के फन्दे में किस भांति आये तब शाहज़ादे ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त आद्यो पांत कह सुनाया जमीलाखातूं यह समाचार सुन्तेही बहुत शोच में हो के बोली कि हे शाहज़ादे अभी तो चौथाई राह भी नहीं बीती है और इतनी आपदा भोग चुका है इसलिये अब इस राह से पांव हटा। क्योंकि यह राह बहुतही कठिन है और इस जवानीको क्यों वृथा। खोनेका बिचार करता है इसलिये तुझको उचित है कि इस घर-को तो अपना घर समझ और मुझे अपनी दासी मान मैं सब प्र-कार तुम्हारी सेवा तन मन से करूंगी और तुम्हारे चैनको अप-नाही सुख जानूंगी शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि यह तो सत्य है और तुमने मेरे साथ ऐसीही भलाई की है कि जो तू मेरे खालकी जूती बनाके पहरे तो उचित है क्योंकि तैने मुझे उस जादू गरनी के ज़ा-ल से छुड़ाया है इसका पलटा जगत में कोई नहीं है मैं जीते जी तेरा ऋणी रहूंगा परंतु प्रथम एक प्रार्थना है जो तुमसे हो सके तो मेरी सहायता करो कि जिसमें वहां पहुंच के अपना मनोर्थ पाऊं तो फिरके तुम्हारे साथ बिवाह करूं और अपने देशको ले चलूं और शेष आयु तुम्हारे साथ भोग बिलास में काटूं जब जमीलाखा-तूं ने देखा कि शाहज़ादा किसी भांति नहीं रहता तो हारके शा-हज़ादेको जानेकी आज्ञा दी और कहने लगी कि अच्छा तुम जा-तेही हो तो एक कमान और तीर और एक खड्ग जो बादशाहोंको भी दुर्लभ है और उसका यह गुण है कि जो तुम पहाड़ पर भी मारो तो दो टूक हो जाय और इस तलवारको अकरब सुलेमानी बोलते। हैं और एक छुरी है जिसको बिद्वानोंने बड़े यत्नसे बनाई है और उसमें यह गुण है कि जिसके पास वह छुरी हो तो उसपै जो।

कोई सदस्त्र मनका दोभ्भी छोड़ देतो उसको पैसा भरभी न मालूमहो और जो काई उसपर चोट चलावे तो किसी भांतिका अस्त्र शस्त्र नबेधेगा और इसका नाम खंजर तैमूसी है ये तीनि वस्तु तुम्हारे साथ देतीहूं राहमें तुम्हारे काम आवेंगी और जबयहांसेजावोगे तोसी सुर्गकी सहायता बिन उसदेशमें न पहुंचोगे क्योंकि वहकाफ की राह में सात महानद पड़तेहैं जो उनको सृष्टि भरके राजा मिलनांघा चाहैं तो भी किसी भांति पार न जासकेंगे तब शाहजादा बोलाकि हे रवादूं मैं वहां किसभांति पहुंचूंगा और सी सुर्ग कहांहै और कैसे पाऊंगा यह सुनके जमीलारवादूं बोली कि मैं तुझको सब बातें बताये देतीहूं ईश्वर कीदयासे बहुत शीघ्र पहुंच जायगा यह कह संदूक खोल अकरब सुलेमानी और तीर कमान शाहजादेके आगे लाधरे और कहने लगी कि जो मैं कहूं सो सुनो कि पहले दिनकी राहमें जो मकान मिलेगा उसको सफ़हेज़मीन कहतेहैं और वहां तुमको एक झरना मिलेगा वहांहीं रात को निवास कीजियो वहां बहुत से जीव रातको आतेहैं उनमेंसे कुछेक अहेर करके अपने पास रख छोड़ियो जब तेरे पास एक सिंह अति बलवान आवेगा वही सम्पूर्ण बन का राजा है तुम उसको देखके भयातुर नहूजियो बरंगा उसके पासजाके सलाम कीजियो और जो रूमालमें तुझे देतीहूं उससे उसका सम्पूर्ण अंग साफ कीजियो तिसपीछे जो अहेर करके अपनेपास रखवाहै सोउसको भोजन दीजियो जब वह भोजन करने लगे तब तू बैठके मांसको छुरी सेटुकड़े २ करदीजियो जब वह भोजन करके तृप्त होगा तब उसके डरसे कोई जीव तेरेपास न आवेगातुम आनंद से सोइयो और इसी भांति बनमें

बाघोंकी सेवा करते जाइयो तो आनन्द से बनके पार होजायगा।
फिर एक दुराहा मिलेगा वहां सचेत होके दाहिनी ओर की राह ली-
जियो बाईं ओरकी राहको मत जाइयो थोड़ी दूर चलके एक जंगि-
योंका कोट मिलेगा वहां चालीस हबशी कि उनमें से प्रत्येक हब़-
शी पांच सहस्र जंगियोंका यूथप है वे उस कोटके द्वार पालक हैं
और वह जंगियों का कोट जगत में बिख्यात है और उस कोट का
स्वामी अतिही निर्दई है परंतु इस रूमाल और तलवार के प्रभा
वसे तेरे ऊपर वह भी अति दयाल हो जायगा दो एक दिन वहां र-
हियो आगे जाके सी मुर्ग़के मकान पर पहुंचेगा वह भी इन्हीं व-
स्तुवोंके प्रभाव से तेरी सेवा करैगा और उसी की दयासे वा काफ़।
के देश में पहुंचेगा परंतु मेरे कहे को स्मरण रखियो इस भांति।
शाहज़ादे को राह बताके घुड़शालसे एक वायु गामी घोडा मंग
वाय के शाहज़ादे को दिया शाहज़ादा सवार होके अपनी राह।
ली तो जमीला खातूं उसके बिरह में ऐसी अधीर हुई कि घोड़ा
के पीछे २ तीन कोस तक चली गई जब शाहज़ादेने पीछे फिरके
देखा तो जमीला खातूं दृष्टि पड़ी उसको देख उतर पड़ा और।
सम्पूर्ण सामान सुख चैन की उसी ठौर मंगवाके उसके साथ
मदिरा पान करके भोग बिलास किया तड़के जमीला खातूं को
मकान की ओर लौटाके आप अपनी राह ली तो जमीला खा-
तूं शाहज़ादे के बिरह में ऐसी बिकल हुई कि जैसे थोड़े पानी में
मछली तड़फती है सोई दशा उसकी हुई कि तन क्षीण मन म-
लीन खान पान त्यागे न किसी से बोले न चाले निदान शाह-
ज़ादेकी बिरह में ऐसी हीन हुई कि तनक चलने की सामर्थ्य
नहीं रही और वहां शाहज़ादा सफ़हे ज़मीन पर पहुंचा तो।

एक दुराहा मिला तहां शाहज़ादे को जमीला स्वातूं का कहा स्म
रण हुआ उ वहीं जाल फैलाके शिकार के आसरे में बैठा जब पहर
रात बीती तब भांति २ के जीव वहां आये उनमें से कितनों को
मारके अपने पास धर रक्खा जब आधी रात बीती तब वे सम्पू-
र्ण जीव बनके अपने २ ठिकाने को गये तो एक सिंह अस्सी ८०
गज़का लम्बा उस बनमें से निकला यह दिढाई से उसके पास जा
य दण्डवत कर रूमाल से उसके हाथ मुंह साफ़ कर जो जीव अ-
हेर करके अपने पास धरे था सो लाके उसके आगे धरे वह बै-
ठ गया शाहज़ादा छुरी से मांस के टुकड़े कर कर के धरता ग-
या और सिंह भोजन करता गया और जो बाघ उसके साथ थे सो
जब तक उसने भोजन किये तब तक चारों ओर खड़े रहे और ज-
ब वह भोजन कर चुका तब उसका जूंठा भोजन औरों ने किया।
शाहज़ादे ने रूमाल से फिर उसके हाथ मुंह पोंछ दिये उसने
शाहज़ादे को बहुत ढाढ़स दिया और कहा कि यहां तू आनन्द।
से सो किसी बात की भय नहीं है यह कह एक बाघ शाहज़ादे।
की चौकी को छोड़ के आप तो बन में गया और शाहज़ादा आ-
नन्द से रात भर सोया सवेरा होतेही उस बाघ ने भी बन की राह।
पकड़ी ।।

छठी कहानी

जंगियों के कोट पर पहुंच के उनसे युद्ध करने और शाह ज़ादे के हाथ से जंगियों के बादशाह के मारे जाने और उसकी बेटी से विवाह कर वा काफ़ के देश को जाने के विषय में ।।

निदान शाहज़ादा अपने परमेश्वर को शीश नाय घोड़े पर

सवार हुआ जब थोड़ी दूर पर पहुंचा तो एक दुराहा मिला वहां। जमीला खातूं की सीख के अनुसार दाहिनी राह में चला जबदो तीन दिन चलनेवाले तो एक कोट सुमेरु गिरि कामा कंगूरा दृष्टि पड़ा कि जिसके प्रत्यक बुर्जी पर बड़ी२ तोपें चढ़ी हुई और युद्धकी सम्पूर्ण सामान भरी हुई है यह देख वहां से फिरने का अनुमान किया पर यह बात बहादुरी के विपरीत जान कहने लगा कि होनी होय सोहोय अबतो चलनेही बनता है इसी भांति शोचना हुआ कोटके पासतक जा पहुंचा तो एक अपूर्ष कोट देखा कि ऐसा कोट बादशाहों ने स्वप्न में भी न देखा होगा कि जिसकी ऊंचाई को देखके हिमालय यद्यपि पर्वतों का राजा है पर वह भी उसके आगे माटीका टीला सा दृष्टि आताथा और उसके आगे एक वृक्ष अत्यन्त भारी लगा हुआ था उसीके नीचे शाहज़ादेने अपना घोड़ा बाँध जीन पोश बिछायके बैठ कोट की शोभा देख रहाथा कि इतनेमें कई एक जंगी दृष्टि पड़े और वे शाहज़ादे को देख बहुत प्रसन्न होके आपसमें बातें करने लगे कि आज बहुत दिनोंमें एक मनुष्य दृष्टि पड़ाहै और हमारा बादशाह मनुष्य का मांस खानेसे बहुत प्रसन्न होताहै इसलिये इसको बादशाह की भेंट देना चाहिये यह अनुमति ठहराय के शाहज़ादेको पास आ उसको पकड़ना चाहा तब शाहज़ादेने कहा कि तुम मुझे किसलिये पकड़तेहो जंगियोंने उत्तर दिया कि हमारे बादशाहको मनुष्य के मांस से अधिक रुचिहै इसलिये उसके पास तुझको ले जायगे तो उसके पलटे हम बहुतसा धनपावेंगे शाहज़ादेने अपनी जानके बाधक जानि कमरसे अकरब सुलेमानी खेंचि सबको एक२।

करके दो टूक किया जब यह समाचार बादशाह तमर ताड़ा को पहुं-
चे तो उसने चिलमाक एक सेनापति को बहुतसी सेना देकर शाह
ज़ादे के पकड़ने को भेजा शाहज़ादे ने जो आंख उठाके देखा तो
बहुतसी सेना चारों ओर दृष्टि पड़ी और एक सरा मात्रमें।
चिलमाक शाहज़ादे के पास आयके कहने लगा कि ऐ मूर्ख तु-
झको अपने प्राणोंकी भय नहीं है जो यहां आके इतने जंगियों
को मारा है जब शाहज़ादे ने ऐसी ढिठाई की बातें सुनी तो पा-
स आय अकरब सुलेमानी निकासी त्योंहीं उसने एक गदा।
शाहज़ादे के शीश पर मारी और कांख में दाबके चाहा कि बाद
शाह के पास ले चलें वैसेही शाहज़ादेने कमर से करौली निकाल
के ऐसी मारी कि लगतेही बड़ाभारी घाव होगया और पृथ्वी पर
गिरपड़ा जब यह समाचार तुरमताक बादशाह को मिला तो ब-
ड़े क्रोधसे बहुतसी सेना लेके शाहज़ादे के पास गया और यह।
बिचार किया कि शाहज़ादे को पकड़के कोटके भीतर ले जांय और
शाहज़ादा जंगियों के युद्ध से घबड़ारहा था क्योंकि एकको मा-
रता तो दश उत्पन्न होते थे उस समय कुछ बनन पड़ा। इतने में दो
सिंह जिनकी सेवा शाहज़ादेने कीथी बहुत से बाघ लेके अचा-
नक दृष्टि दान हुये और बादशाह की सेना की ओर झुके यह दे-
ख जंगी लोग मनमें शोचने लगे कि यह मनुष्य नहीं है कोई म-
नुष्यके भेषमें यम दूत है आ पहुंचा है फिर सम्पूर्ण सेना कोट के
भीतर जानेलगी उससमय शाहज़ादे ने अच्छी तरह सचेत हो स-
ब को मार २ गिराने लगा इतने में शाहज़ादे की निगाह अचानक
तुरमताक पर पड़ी कि ताड़ के सदृश लम्बा हाथ में गदा लिये औ
र बहुत से पत्थर के टुकड़े लिये कोटके भीतर जाता था कि शाहज़ा-

देने ललकारके कहा किरेकायर कहांजाताहै खड़ा तो रह जब तुरमताकने शाहज़ादे की ललकार सुनी तब फिरके बोला किहे मनुष्य कुशल तो है आ देख एकही गदा में तेरी हड्डियां चूर कियेडालताहूं यह कहके यद्यपि भयातुर था तद्यपि शाहज़ादे के ऊपर धायकर गदा चलाई पर शाहज़ादेने ऐसा घोड़ेको कावादिया। कि गदाकी वायुभी शाहज़ादे के अंगमें न लगी और गदा उसके हाथसे छूट गिरी तब बादशाहने जाना कि वह मनुष्य तो मारे गदा के माटी में मिल गयाहोगा इसी विचारसे धरती टटोलने लगा इतनेमें शाहज़ादा घोड़ा फिराके उसके सन्मुख आय के खड़ा हुआ शाहज़ादेको देखके तुरमताक बादशाहने पूँछा कि तू मेरे गदा प्रहारसे कैसे सजीव बचा जो पर्वत होता तो वहभी माटीमें मिलजाता तब शाहज़ादेने उत्तर दिया कि ईश्वर की दया से मैंने तेरी गदा की वायुभी नहीं जानी कि कैसी होती है यह सुनके तुरमताक ने चाहा किउदके दूसरी गदा मारें त्योंहीं शाहज़ादे ने अकरब सुलेमानी नामकजो तलवार लियेथा ऐसी शिरपै मारी कि जरासिन्धु के समानहो फांकहो गई उस समय रणभूमि में रक्तकी नदी बहतीथी और जंगियों के भड़ खंस वो घड़ियालसे लगतेथे और। शीशमानोंकमठ और बालसिवारके समान थे और छुरीकटारी। मछलियोंके सदृश चमकरहीं थीं निदान वह सिंह जो शाहज़ादे की सहायताको आयाथा इसकी मनुसाई देखके अति सराहना करनेलगा शाहज़ादे ने उसी रूमालसे उसके हाथ मुँह फिर पोंछा तब सिंहउसको कोट के भीतर ले गया तो शाहज़ादा तुरमताक। कवाड़ को देखके अतिही प्रसन्नहुआ जब तुरमताककी बेटी जो चन्द्रकला के समान सिंहासनपर शोभित थी शाहज़ादेको

देखके सिंहासन से उठके आगे लेनेको आई और लेजाके सिंहासन पर बैठाया और शाहज़ादेको खाना खिला पिला के मुसल्मानी मतका उपदेश लिया और शाहज़ादे से कहने लगी कि हे शाहज़ादे अब मैं तेरी दासी हूं जहां तू रहेगा वहां मैंभी परछांई के समान तेरे साथ रहूंगी तब शाहज़ादे ने कहा कि हे प्यारी अभी मुझे एक आवश्यकताहै लौटके तुझको अपने साथ निज देशको ले चलूंगा परजबतक मैं लौटके न आऊं तबतक तू आनंद से राज्य कर फिर शाहज़ादे ने उस मित्रसे एक बाघ उस सुंदरी की रक्षाको मांगा तो वहएक बाघ चौकीदेने के लियेछोड़गया फिर शाहज़ादा जंगियों की घुड़मार से एक उत्तम घोड़ा ले सवार हो वहांसे आगेको सिधारा ॥

सातवीं कहानी

शाहज़ादे का सी मुर्ग़ के मकान पर पहुंच कर सर्पको मार उसके बच्चोंको बचाने और सी मुर्ग़ की सहायता सेवा काफ़ देशमें पहुंचनेके विषय में॥

निदान दोतीन महीने चलने के उपरान्त शाहज़ादे को एक वन ऐसा हरा भरा मिला कि उसके आगे इन्द्र का उपवन दृष्टि में नहीं जंचता था कि वृक्षों के ऊपर बररा२ के पक्षी कोलाहल कररहे थे और ठौर २ नहरें स्वच्छ पानीकी बहती हुई देखा शाहज़ादा उसवनकी रम्यता देख एक वृक्ष के नीचे बैठगया और उसके नीचे एक हौज़ संग मरमरका बनाहुआ जिसका पानी एक ओर से दूसरी ओरको बहताथा देखा शाहज़ादे ने वहां बैठके मनमें सोचा कि होय न हो तो यही ठौर सी मुर्ग़ के रहने का है इसलिये सभीसारवाह के कहने के अनुसार यहां निवास करना

उचितहै यह शोचके घोड़ाको चरने को छोड़ आप हौज़में स्नान करके जो भोजन पास बांधेथा सो खाकर उसी वृक्षके नीचे बिछौना बिछाय के सोने लगा शाहज़ादा मारे राहकी थकावट के अचेत सोरहा इतने में शाहज़ादे का घोड़ा भागकर शाहज़ादे केशिरहाने पृथ्वी पर टापें मार२ हिन हिनाने लगा उसका हिनहिनाना सुनके शाहज़ादा चौंकपड़ा तो क्यादेखता है कि एक कालासर्प सामनेचलाआताहै और जो वृक्ष और एत्थर उसकी छातीके नीचे पड़ताथा सो तत्काल पिसके भस्मीभूत होजाताथा शाहज़ादा उसको देख परम भयातुर हो घबड़ाके उठा और इसहाक पैगम्बरकी कमान ले चोरा से तीर निकाल वारा साध घात लगाय के बैठा जब शाहज़ादेने देखा कि यह वृक्ष पै चढ़ा चाहताहै त्योंहीं शाहज़ादेने खैंचके ऐसा तीर मारा कि उसका फन घायल होगया तोवह वृक्ष के नीचे तड़फड़ाने लगा थोड़ी देरमें उसके मुखसे एक ऐसा लूक निकला कि सम्पूर्ण बनमें चाँदनी छागई और मारे विषकी आगके पृथ्वी तपने लगी और सर्पने क्रोधकी दशामें शाहज़ादे को देखके चाहा कि वायु के साथ शाहज़ादे को अपने मुखमें खींच ले परंतु शाहज़ादा उसके सामने से अलग होके एक तीर उसके गलेमें और मारा पर वह अच्छी तरहसे नहीं लगा तब शाहज़ादे ने परमेश्वर का स्मरण करके ऐसी तलवार मारी कि एकही वारमें वह दुखदाई मृत्यु वश हुआ पर शाहज़ादा मारे विषकी आंचके अचेत होगया था जब थोड़ी देरमें चेत हुआ तो ईश्वरको दण्डवत कर हौज़में जाके अपना शरीर जो रक्तमेंडूबा हुआ था धोया फिर कुछ भोजन करके उसी हौज़के किनारे

बैठ गया इतने में उस वृक्ष के ऊपर को जो दृष्टि करी तो देखा कि उसीके ऊपर सी मुर्ग़ी का घोसला है सी मुर्ग़ी के बच्चे ऊपरसे उस सर्प के साथ शाहज़ादे कीलड़ाई का तमाशा देख रहेथे परंतु। मारे भूखके चिल्लायरहेथे शाहज़ादे ने उसी सर्पके मांसको छुरीसे काट २के उन बच्चोंको खिलाया जब उनका पेट भरा तब वे तो अपने घोसले में सोरहे और शाहज़ादा भीउसी हौज़के किनारेपर सो रहा इसबीचमें सी मुर्ग़ीका जोड़ा जो चरने को गया। था सो आया तोउनमेंसे पुरुषबोला कि यही मनुष्यहै जोहमारे बच्चोंको सदा मारखाताहै और हमको पुत्र शोक देताहै इसलिये उचितहै कि आज हमभी इसका चिन्ह मिटायदें यह शोच के कई हज़ार मनका पत्थर का टुकड़ा उठाय लाया और शाहज़ादेके ऊपर छोड़ देनेके विचारमें था कि इतने में स्त्री बोली कि अभी इस मनुष्यको वध करना उचित नहींहै पहिले मैं अपने बच्चोंको देखलूं कदाचित यह हमारा हितूही होतो इसको वध कर के अन्तके दिन ईश्वर के आगे क्या उत्तर देंगे क्योंकि बुद्धि मानों ने कहाहै ॥

चौ० सहसा करि पाछे पछिताहीं। कहैं बेद बुधतेबुध नाहीं॥

यह नीति संयुक्त बानी स्त्री की सीमुर्ग़ी पुरुष को बहुतही अच्छी लगी जब स्त्रीने घोसला मेंदेखा तो बच्चे आनन्द से सोरहेहैं पर आहट सुनके बच्चे जागउठे और सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनी मातासे कहा तब वह सुनके बहुत प्रसन्न होके शाहज़ादे की बड़ी प्रशंसा करने लगी और कहा कि इस सत पुरुष ने मेरे साथ बहुत भलाई कीहै इससे मुझे भी इसके पलटे में कुछ इसके साथ भलाई करना उचितहै यहकह वृक्षके नीचेउतर के

शाहज़ादे के ऊपर अपने पंखों से छाया किये रही जब शाहज़ादा। सोके जागा तो सीमुर्ग़ की स्त्री ने बड़ी दया से कुशल प्रश्न के उपरान्त पूँछा कि हे जवान तुझको कौन ऐसी विपत्ति पड़ी है कि जिसके कारण तू ऐसे विकट वन में जहां मनुष्य की तो कौन। बात है कीड़ी पशु भी नहीं आता है और तैने मेरे साथ बहुत भलाई की है कि ऐसे बड़े शत्रु के हाथ से मेरे बच्चों को बचाया अब तू बता कि यहां किस प्रयोजन से आया है उसमें मैंभी यथा सामर्थ्य सहायता करूं तब शाहज़ादे ने सीमुर्ग़ से अपना वृत्तान्त आद्योपान्त कहा तो सीमुर्ग़ बोला कि हे शाहज़ादे तू यहां कुछ दिन रह और जो कुछ मैं बताऊं सो मार्ग की आवश्यक वस्तु इकट्ठी करले तो चलने की यत्न करनी होगी शाहज़ादे ने कहा कि आप दया करके शीघ्र बताइये तो मैं मार्ग का सामान इकट्ठा करूं सीमुर्ग़ ने कहा कि हे शाहज़ादे यहां गोरखर बहुत आते हैं उनमें से दो चार मारके उनके मांस का क़बाब बनाके और उन की खाल की मशक बना पानी से भरके अपने साथ रखलो क्योंकि जब मैं तुझे अपनी पीठ पै चढ़ाके समुद्र पार उतारूंगा तो अति निर्बल होजाऊंगा उस समय वही पानी और कबाब दीजियो उसी भोजन और जल के सहारे से सात समुद्र पार करके शहर वा काफ़ में पहुँचूंगा शाहज़ादे ने सीमुर्ग़ की आज्ञानुसार। सात गोरखर मार उनके मांस का क़बाब बनाया और उनकी। खाल में पानी भर के तैयार किया तब सीमुर्ग़ से कहा कि राह का सामान तैयार है सीमुर्ग़ ने कहा कि अब तू मेरी पीठ पर। सवार हो और जब एक सागर लांघिके पार जाऊं तो मुझे यह क़बाब और पानी दीजियो यह सुन शाहज़ादा सीमुर्ग़ को।

ऊपर सवार हुआ एक सागर के पार हुआ तो सी मुर्ग़ी को क़वाब। और पानी दिया इसी भांति क़वाब खिलाना पानी पिलाना शहर वा काफ़ में पहुंचा तब सी मुर्ग़ी शाहज़ादे से बोला कि हे शाहज़ादे तैंने मेरे साथ ऐसी भलाई की है कि मैं उसका पलटा इस स्रष्टि में नहीं देखता और मैंने तुझे पुत्र कहा है इसीसे मैं तेरे साथ यहांतक आया हूं और यहांसे शहर वा काफ़ की राह जाती है अब तुझे अपने कई पंख दिये जाता हूं जब तुझको कोई कठिन काम पड़े तब तू मेरे पंख अग्निपै धरियो उसी समय तत्काल मैं अपनी सेना लेके तेरे पास पहुंचूंगा यह कह सुरवारीद का एक दाना शाहज़ादे को दे सीमुर्ग़ विदा हुआ॥

आठवीं कहानी

शाहज़ादे को शहर वा काफ़ में पहुंच कर फर्रुख़फाल से मिल उस के द्वारा सनोवर शाह की सेवा में पहुंच उसको बचन बन्द कर गुल के वृत्तान्त के निर्णय के विषय में।

निदान शाहज़ादे ने शहर वा काफ़ की राह ली दो तीन दिन बीते शाहज़ादे को एक कोट दृष्टि पड़ा जब निकट पहुंचा। तब परमेश्वर को स्मरण कर कोट के भीतर गया और उस शहर की गलियों में फिरने लगा शाहज़ादे ने शहर का बनाव देख के जाना कि शहर वा काफ़ यही है परंतु महरंगेज़ का प्रश्न कैसे मिले इतनेमें एक मनुष्य फर्रुख़ नामक मिला शाहज़ादे ने उससे ऐसी मित्रता की कि वह एक समाभी जो शाहज़ादे को न देखे तो जैसे जल बिन मीन बिकल होने लगे ऐसे वह व्याकुल हो निदान एक दिन शाहज़ादे ने उससे साधारणरीति से पूँछा कि हे मित्र गुलने सनोवर के साथ क्या किया

जो तुझको कुछ इसका हाल मालूम हो तो बता यह सुनके वह मनुष्य मारे क्रोधके आग बबूला होगया और भृकुटी टेढ़ी करके बोला कि जो मेरे तेरे बीच मित्रता न होती तो अभी तुझको मार डालता शाहज़ादा यह सुनके कम्पित हो शोचने लगा कि यह मनुष्य निस्संदेह इस वृत्तान्त को जान्ता है तब। शाहज़ादा बोला कि हे मित्र जो मेरे मारने में तू प्रसन्न है तो। मुझे इन्कार नहीं है परंतु पहिले वह वृत्तान्त मुझको बतादे जिसमें मरती बेर यह अभिलाष मन में न रहै जब उसने शाहज़ादे को इस वृत्तान्त का अतिही खोजी देखा तो कहा कि अच्छा किसी समय बताऊंगा यह सुनके शाहज़ादा इस आसरे में रहा कि देखें कब यह बतावेगा जब मनका ताप मिटेगा एक दिन उस मनुष्य ने शाहज़ादे को बहुत दुचित्ता देखके कहा कि हे प्यारे सनोवर इस शहर के बादशाह का नाम है और गुल उसकी बेग़म अर्थात् पटरानी का नाम है सो इस शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया है कि जो कोई बिदेशी आके गुल। और सनोवर का वृत्तान्त पूंछे उसको वहीं बध करो इससे अधिक मैंभी नहीं जान्ता और यह भेद कि गुल ने सनोवर के साथ क्या किया सिवाय बादशाह के कोई नहीं जान्ता इसी मारे मैंने तुझको मित्रता की रीति से अप्रसन्न हुआ जो तू इस भेद ही को जाना चाहता है तो मैं तुझको बादशाह के पास ले चलूंगा उससे तू पूंछ लीजियो निदान वह मनुष्य शाहज़ादे को एक दिन अपने साथ बादशाह के पास लै जाके प्रार्त्थना करी। कि हे दीनदयाल यह बिदेशी पुरुष आपकी दयालुता और नीति का सुयश सुनके बडी दूर से आपके दर्शनों के अभिलाष से आया है और इस बात का आ

शावानहै कि आपकी सेवा में रह कर अपना पोषण करे बादशाह शाहज़ादे को देख के बहुत प्रसन्न हुआ और अपनी सभा में दिन प्रति बर्त्तमान रहने की आज्ञा दी तब शाहज़ादेने वही दाना मरवारीद का जो सीमुर्ग ने दिया था सो बादशाह को भेंट दिया। बादशाह उस अमौल्य रत्न को देख अतिही प्रसन्न होके शाहज़ादे से पूंछने लगा कि यह रत्न तू कहां से लाया है उस समय शाहज़ादे ने झूंठ बोलना उचित जानके कहा कि महाराज मैं सौदागर हूं सो बहुत से रत्न इसी प्रकार के लेके आपके दर्शनों को आता था जब राह में जंगियों के कोट के पास पहुंचा तब उन्होंने मेरा सम्पूर्ण धन लूट लिया यहां तक कि पानी पीने को लोटा भी न छोड़ा परन्तु यह मरवारीद का दाना जो आपको भेंट दिया है सो मेरी बाँह पै बंधा हुआ था इसपै उनकी निगाह नहीं पड़ी इससे यह बचरहा यह सुनके बादशाह को और भी अधिक दया और प्रीति हुई तब बादशाह ने सम्पूर्ण सामान आनन्द का उसको इकट्ठा करा दिया और जैसी कृपा विदेशी लोगों पर बादशाहों को करनी उचित है वैसी की और शाहज़ादे को ऐसा अपना मित्र बनाया कि उसके बिन देखे एक सराय मात्र भी कल न पड़े जब बादशाह की बहुत प्रीति बढ़ी तो एक दिन शाहज़ादे से बोला कि हे मित्र अब बता कि तेरी अभिलाष क्या है सो प्रगट कर उसे मैं सब प्रकार पूरी करूं यह सुन शाहज़ादे ने सोचा कि ऐसा समय फिर हाथ न आवेगा इसलिये अब अपना काम करना चाहिये तब शाहज़ादे ने कहा कि मैं अपने मन का भेद एकान्त में कहूंगा यह सुन बादशाहने शाहज़ादे को एकान्त में बुलाय ले जाय के पूंछा कि अब बता तब शाहज़ादेने

कहा कि जो जीवदान पाऊं तो निर्भय हो निज मनकी अभिलाष
कह सुनाऊं बादशाहने कहा कि मैंने तुझको जीवदान दिया न-
ब शाहजादे ने कहा कि हे पृथ्वीपति मैंने किसी से सुना है कि
गुलने सनोवरके साथ क्या किया। उसीदिन से मैं इसी की शो-
धमें विपत्ति भोगता हुआ फिराहूं पर इसका उत्तर कोई नहीं दे
ता और केवल इसी भेद के जानने की अभिलाष से नाना प्रका-
रके कष्ट भोगता हुआ यहां तक आया और आपकी सेवाका
अधिकारी हुआहूं सो हे दीनदयाल मेरे मनकी अभिलाष यही
है कि आप दया कर इस भेदसे मुझे सचेत करिये यह सुन के
सनोवर शाह बादशाह अग्नि की ज्वाला समान जलने लगा
और रक्त समान लाल २ नेत्र कर शाहजादे से कहने लगा अ-
ब क्या करूं प्रथम तुझे जीवदान दे चुकाहूं नहीं तो अभी तेरा
शिर काट डालता अब बचन बन्द होने के कारण क्रोधाग्नि में
अपनेही तनको दाहताहूं इससे उचितहै कि तू इस भेद को म
त पूंछ क्योंकि यह भेद प्रकट करने के योग्य नहीं तब शाह-
जादेने कहा कि हे दीनदयाल प्रथम आपने कहाहै कि जो
तेरे मनकी अभिलाष हो वह पूरी करूंगा और मेरे इसके सि
वाय दूसरी अभिलाष नहीं है जो आप अपने बचन का प्र-
तिपाल किया चाहते हैं तो मुझे यह भेद बता मनका संता-
प दूर कीजिये जब बादशाहने सत्य कहने के सिवाय कुछ
उपाय न देखा तो चुपका हो रहा फिर एकदिन बादशाहने
नाच रंगकी आज्ञादी उस दिन बादशाह और शाहजादा
और कितने एक गाने बजाने वाले इकट्ठे हुये और वहां म-
दिरा पान करने लगे और गाने वाले मीठे २ स्वरोंसे मनवह

लानेलगेरागगानेलगे इतनेमेंबादशाहने एक प्याला मदिरा काभ-
रके शाहज़ादे को दिया शाहज़ादेने बड़े हर्ष से लेके पीलियाफि-
रतो आपसमें मिलके भली भांति मदिरा पानकी तब शाह-
ज़ादेने निर्लज्ज निर्भयहो एक सितार उठाय के सितार के ता-
रमिलाय इसढब से नीचेकी चौपाई गाई कि सम्पूर्ण स-
भासद सुनके चित्रके सदृश जहांके तहां रह गये ॥

चौ॰ मैंजो कहूं सत्यसो मानों। रोदन समय वीरमतिजानों।
जोटपकत नयननसोंआंसू। सोसब सुनोंमानिबिश्वासू
विरह छुरी लागीहिय गाढ़ी। तातेरक्तधार हिय बाढ़ी ॥
सो नहिं ठौर बहनकी पायो। तातेनयनन द्वार बहायो॥
प्रात समय जोफूल निहारो। तापर मतिहि त्रासमनधारो
लाज समय चम्पकबदनीके निकस्योरैन नीर यहढीके॥
रात समय सोबन की बेरा । सुधि आई प्यारी वहि डेरा ॥
मन समुद्र सूख्योतेहिशोग। मोती तजे लाख के योग ॥
सोई नयनन लिये बटोर । बिखरि परे तिनसोंयहि ठोर
सुनियेहैं स्वाती को बूंद । नयन सीपलीन्होंमुखमूंद।
मित्रलखन कोनयनउघारे। निकसे मोती मनहुं सुढारे ॥

फिरबादशाहने शाहज़ादे को अपने पासबुलाके कहा कि।
मैं तेरे गानेसे अतिही प्रसन्नहूं अबजो तेरे मनकी अभिला-
षहो सो कह मैं सब पूरी करूंगा तब शाहज़ादेने कहा कि मेरे
तो उसभेदके पूंछन के सिवाय और कोई भी अभिलाष नहीं
है यह सुन बादशाहने कहा कि एक बातपै तुझको यह भेद।
बताताहूं कि जबतुझसे इस वृत्तान्तको आद्योपान्त कहसु-
नाऊंगा तो तेरा शिरकाटलूंगा जो तुझको यह बात पसंदहो

तो मैं तुझसे यह भेद कहूं शाहज़ादे ने यह बात मानली ॥

नवीं कहानी

सनोवर शाह और गुल के मिलने का वृत्तान्त जानने और जंगी और गुलकी आपदा देखने के विषय में ॥

निदान एक दिन सनोवर शाहने शाहज़ादे से कहा कि हे प्यारे काहेको वृथा जीव खोताहै अबभी तेरा कुछ नहीं बिगड़ाहै भलाई इसीमें है कि इसलाज संयुक्त भेद को मत पूँछ पर शाहज़ादे ने न माना तब सनोदर शाह ने शाहज़ादे के हुदसे अपने नौकरोंको आज्ञादी कि वह कुत्ता जिसके गरदन में जड़ाऊ तौंक पड़ाहै ले आवो तब कई नौकर जो उस कुत्ता की सेवाके लिये नियत थे ले आये और एक जरबफ्त के बिछोना पर उसको लेकर बैठाला फिर कितनी एक दासीभी आय वर्त्तमान हुई तिस पीछे एक स्त्री अत्यंत स्वरूपवान जिसके गले में तौंक पांवमें बेरी और हाथोंमें हथकड़ियां परीहुई बारह १२ जंगियों के पहरमें थी सोभी बुलवाई गई तिस पीछे एक थार जिसमें एक जंगी का शिर ऐसा भयानक कि जिसको देखने से अत्यन्त भय मालूम होवे लाकर उस चंद्रमुखी के सन्मुख रक्खा फिर बादशाह ने कांसे की आज्ञादी रसोइयों ने भांति २ के व्यंजन लाके उस कुत्ताके आगेधरे जब कुत्ता भोजन कर चुका तो वही कुत्ताका जूठा भोजन एक महा निषिद्ध थाल में करके उस चन्द्रमुखी के आगे धरा जब वहकई ग्रास भोजन कर चुकी तब बादशाह ने उठके एक लकड़ी बड़े जोरसे उसजंगी के शिरमें मारी कि बहुत से बूंद रक्तके उस शीश से टपक

पड़े वे रक्त के बूंद नौकरों ने उठाय उस स्त्रीको बरबस चटा दि-
ये तब बादशाहने कहा कि हे मनुष्य अबतो तैंने सब हाल।
देखा इसलिये तेरा शिर काटताहूं शाहज़ादेने उत्तरदिया
किहे दीनदयाल आपकी दयासे यहतमाशा तो देखा पर
इसका कुछ भेद न जाना जब शाहज़ादे से यहसुना तो बाद-
शाह उस वृत्तान्त के कहनेको उद्यतहुआ इतनेमें वहस्त्री
रोयउठी उसके रोतेही जो आंसू उसकी आंखों से टपके सो
मोतीहो गये वह मोती नौकरों ने उठाके बादशाहको दिये फिर
लगा एक में वह परी हंस पड़ी तो बहुत से फूल उसके मुख से
झड़ पड़े वेभी नौकरोंने उठाके बादशाह को दिये बादशाह
ने देख नौकरों को आज्ञादी कि इनको अच्छी जगह धरो इ-
तनेमें बादशाहने फिर शाहज़ादे के शिर काटने की आ-
ज्ञादी तो शाहज़ादे ने कहा कि पहिले मुझे सब भेद इस अ-
चम्भेका बतादीजिये तिसपीछे मनमाने सोकीजिये तब
बादशाहने कहा कि हे विदेशी यह जो स्त्री लोहेकी जंज़ीर
में कसीहै इसीका नाम गुलहै और मेरा नाम सनोवर है
मैं इस देशका बादशाह हूं शाहज़ादे ने पूंछा कि आपने इ-
सको कहां और कैसे पायाहै बादशाह ने कहा कि एक दि-
न मैं अपने नगर से शिकार के लिये निकला तो एक वि-
कट बनमें मैं मारे प्यासके पानी खोजने लगा तो बड़े खोज
से एक कुआँ मिला पर वह कुआँ भी ऐसे ठौर परथा कि ज-
हां मनुष्य कीतो कौन कहे पक्षीभी नहीं था वहां मैंने अपनी
कुलाह की लुटिया और पगड़ी की डोरी बनाके कुआँ में फां-
सी दैव योगसे वह कुआँ में अटक रही और मैं मारे प्यासके

मरने के निकट पहुंचा था बहुतेरा डोरी हिलाई पर किसी भांति न छूटी तब मैंने कहा कि जो कोई इस कुआँ में बसता हो सो मेरे ऊपर दया करके डोरी को छोड़दे क्योंकि मैं मारे प्यास के व्याकुल हूं जब मैंने इस भांति दीन बचन कहे तो भीतर से बोल सुनाई दिया कि हे पथिक तू हमको इस कुयेंसे दयाकरके निकाल क्योंकि कितने एक दिन से हम इस कुआँ में पड़े हैं तब मैंने उनको बड़ी कठिनता से बाहर निकाला तो देखा कि दो अंधी बुढ़िया हैं अंग उनका कमान की भांति टेढ़ा और तन ऐसा क्षीण कि हाथ पांव मानों सींक हैं आंखें कपाल में घुस गई हैं शिर हलता है दांत गिर गये हैं पांव धरते डगमगाती हैं शिर के बाल श्वेत हैं मारे दुबले पन के सारी देह में सिकुड़े पड़ गये हैं ऐसी दो मूर्तें मेरे सन्मुख खड़ी हुईं तब मैंने उनसे पूँछा कि इस कुआँ में तुम्हारे बन्द होने का क्या कारण है उन स्त्रियोंने कहा कि हे पथिक यहां के बादशाह ने हमको अंधी बनाय के इस कुआँ में डरवा दिया था अब परमेश्वर ने तेरे द्वारा हमको इस कुआँ से निकाला है परंतु हम तुझको एक औषधि बताती हैं जो तू दयाकरके उसको लाके हमारी आंखों में लगादे तो हमारी दृष्टि यथा पूर्वक होजाय तुझे इसमें बड़ी पुन्य होगी और इसके पलटे में हमभी तेरी सेवा करैंगी यह सुन मैंने उनसे पूँछा कि औषधि तुम्हारी आंखोंकी क्या है तब उन्होंने कहा कि यहांसे थोड़ीसी दूरपै एक नदी वे कनारे है उसके तीरपर एक गऊ चरने को आती है उसका गोबर लेके हमारी आंखों में लगा दे तो अच्छी होजांय परंतु एक काम कीजियो कि जब तू वहां जाय तो अपने को उस गऊ की

दृष्टि से ओट में रखियो नहीं तो तुझको वह सजीव न छोड़ेगी निदान मैं उन अंधी स्त्रियोंके पलेसे गया थोड़ीदेर में उसनदीके तीरपै जा पहुंचा तो देखा कि सत्यही एक गऊ रूपेकी उस नदीसे निकली मैं तुरंत ओट में हो रहा जब वह चर फिर नदीमें गई तो मैं उसका गोबर लेके उसीकुआंपै आय। उनकी आंखों में लगाया तो तुरन्त उनकी आंखैं आमकी सी फांकैं खुलगईं तो उसने चारों ओर देख परमेश्वर का धन्यवाद किया और मेरी मनुसाई की बड़ी प्रशंसा की कहनेलगीं कि यहां परियों का बादशाह रहता है उसकी बेटी ऐसी स्वरूपवान है कि उसके सुखवारबिन्द को देख पूनो का चंद्रमा लज्जित होता है और उसके माता पिता भी उसको रूपपै लोभहैं कि एक छिन भी उसको आंखोंसे अलग नहीं करते हम तुझको उसके पास ले चलतीहैं तू आनन्द से उसके साथ भोग बिलास कीजियो और जो कदाचित उसके माता पिता पर तेरा उसके साथरहना बिदित होजाय तोवे तुझको अग्निमें छोड़ने की आज्ञा देगें उस समय तू कहियो कि जो मुझ दीनको आप अग्नि में छुड़वाने की आज्ञा देतेहैं तो थोडासा तेल मेरे अंग में मलवा दीजिये जिस्में शीघ्र संसार के दुखसे छूटजाऊं तो परियोंका बादशाह तेरी यहबात सुनके तैल मलने की आज्ञा देगा उस समय हमतेरे अंगमें ऐसा तेल मलदेंगी कि अग्नि में तो तू हजार बर्षतक पड़ारहै तौभी तेरी देहमें आंचन लगै निदान वे बुढ्ढा मुझसे यों कहके उस महल के भीतर लेगईं तो मैंने जाना कि सत्य२ इन्द्रपुरी यहीहै वहां एक रत्न जटित तख्त।

पर एक चंन्द्रमुखी सोती हुई देखी कि जिसके मुखारबिन्दकी चमक के आगे सूर्य्य की किरण मध्यम लगती थी और उसीकी शोभासे सम्पूर्ण मकान जग मगाय रहा था ॥

दशवीं कहानी

गुल और सनोवर शाहका मिलना दोनों बुढ़ियों की सहायतासे और अग्नि में डारे जाने के उपरान्त गुलपटरानी के साथ बिवाह होनेके बिषय में ॥

निदान मैंने जब दूरसे उसका स्वरूप जो देखा तो ठगा सा होगया जब थोड़ी देरमें चेत हुआ तो अपने मनमें शोचा कि हे भगवान यह मैं स्वप्न देखता हूं कि सत्य२ है फिर आपको सम्भाल परमेश्वर का स्मरण कर शोचा कि जो मैं यहां सोया तो अपने प्राणों से हाथ धोया इसलिये मनको पुष्ट कर उस चंद्र मुखीके सन्मुख जाय खड़ा हो रहा एक क्षण में वह जागी तो मेरे ऊपर दृष्टि पड़ते ही उसके नयनोंका बाण ऐसा लगा कि हृदय के वार पार हो गया और उसके मिलने की लालसा से अधीर होगया। और वह सुंदरी भी भौंहैं चढ़ाय क्रोध के चिन्ह प्रकट कर झड़क के बोली कि पुरुषतू अन चीन्हा पराये घर में कौल है और कहांसे आयाहै और किस प्रकार यहां आयाहै तुझको अपने प्राणों की बाधा नहीं है जो मरने के लिये यहां आया है इस भांति की ऊपरी बातें डरपाने की बहुत सी करीं परंतु अंतर में मेरे मिलने की अभिलाष उसके भी मनमें बढ़ी तब मैंने कहा कि मुझे मरने से कुछ डर नहीं क्योंकि

दो० जरा मरण जगमें सरा याको कौन अँदेश॥
तोसी प्यारी के लिये सहिये बिबिध कलेश॥

निदान इसी भांति की लगावट की बातें करता रहा जबउसने देखा कि यह किसी भांति नहीं डरता तबतो उसने उठके बड़े दिमाक़ से मेरा हाथ पकड़ के मसनद पर बैठाल मेरे हृदय से चिपट गई उस समय जो सुझे हर्ष हुआ सो केवल मनहीं जान्ता है और जिह्वाको कहां सामर्थ्य है जो कहै फिर। उसने अंगूर की मदिरा मंगवाई और आपस में बैठके दोनों मदिरापान करनेलगे और मैंने उसमकान को सूना पाया। तोमदिरा के मदमें उस प्यारी से भोग विलास करने लगा इसी भांति कई दिन आनन्दसे बीते परन्तुउस प्यारी को अपने माता पिताकी भय अधिक रहा करती थी कि ऐसा न हो कि उनको यह भेद विदित होय तो बिछोह का समय पहुंचै और दोनों के हृथा प्राणजांय इसी शोच में निशि दिन मनहीं मनमें कुढ़ा करती निदान इसी हर्ष विस्मय में दो मास बीते परंतु जैसी कहावत प्रसिद्ध है कि॥

दो० ढबकाये से कबहुरे घास घुसेरे आग॥
यथाप्रीति जगखुलैगी जिमि पानी को झाग

अंतको सोई हुई कि एक दिन उसके पिता परियों के बादशाह ने अपनी बेटी को देख बहुत बिस्मित हुआ और उसी समय अपनी स्त्री को बुलाके कहा यह क्या कारण है कि इसके मुखका रंग बदलाहै इसका भेद लेना उचित है यह सुन उसकी माता उसके पास आय के पूंछने लगी कि हे बेटी सत्य बता कि तेरी चेष्टा बदलने का कौन हेतुहै सत्य २ बताते नहीं

तो तत्काल ही तुझको मरवाडालूंगी निदान जितना उसके माता पिता उससे पूंछते थे उतनाही वह मौन साधती थी इससे उसके पिताने जाना कि निस्संदेह इससे किसी पुरुष का संयोग भया और लाज छोड़ माता पिता के मस्तक में लीलका टीका दिया तब परियों के बादशाह ने क्रोध में आके देवोंको बुलाके आज्ञादी कि इस जवान को ले जाके अग्नि के कुण्ड में छोड़ दो देव आज्ञा पातेही मेरा हाथ पकड़ के मकान के बाहर निकाला और काष्ट इकट्ठा कर अग्नि लगाई जब ज्वाला उठी तब मुझे उस्में छोड़ने का बिचार किया तब मुझे उन दोनों बुढ़ियों की सीख सुध आई तो मैंने पुकार के कहा कि हे परियों के बादशाह जो दण्ड तैंने इस दोष के लिये नियत कियाहै सो उचित है परंतु ईश्वर के लिये। अपने राज्यकी निछावरि थोड़ासा तैल मेरे तनपै मलवादे जिस्में शीघ्र जलजाऊं और सृष्टिके दुःख से छूट जाऊं यह मेरी बात उसने मानके तैल मलने की आज्ञादी तो न जाने। उन बुढ़ियों ने काहे का तैल मेरे तन में मल दिया कि सात दिन तक मैं अग्नि में पड़ा रहा परंतु देही में कहीं एक झलका। भी न पड़ा बरण वह आग पानी के समान मुझे लगी और जब उन देवोंने जो मेरे जलाने को नियत हुये थे जाना कि अब तो वह मनुष्य जलके राखहोगया होगा तब यह समाचार। जाके बादशाह से कहा कि अबतो वह मनुष्य राख होगया। होगा तब बादशाह ने आज्ञा दी कि राख वहांसे उठाके दूसरी ठौर छोड़दो जबवे देव मेरी राख उठाने को आये तब मुझे उस आगमें सजीव पाके बहुत आश्चर्य्य करके कहने लगे कि यह

मनुष्य कोई सिद्धहै और यह सुन्दरी इसीकी भाग्य में लिखी है तब देव और परियोंने बादशाह को समझाया कि कुंवरि का बिवाह इस मनुष्य के साथ करना उचित है तब बादशाहने उनकी अनुमति अनुसार शुभ सायत बिचारके बिवाह की सामा इकट्ठी करनेकी आज्ञादी आज्ञापातेही देव और परीबिवाह की सामा इकट्ठी करके बादशाह के पास आये तब बादशाहने मुझे अपने सन्मुख बुलाया। मेरा नाम गाम पूंछा तो मैंने कहा कि मैं शाहर वा काफ़का शाहज़ादाहूं बहुत दिनोंसे तेरी बेटीकी प्रीतिमें फंसाहूं अब परमात्माने तेरे हाथ में मुझे बन्द किया है तू उचित जो जान सो कर यह सुनके बादशाह ने मेरे हाथ पांव खुलवाके मुझे अपने सिंहासनपर हाथ पकड़के बैठाला और अपने अपराधकी क्षमा मांगने लगा निदान उसी सायत पर मेरा बिवाह उस सुंदरी के साथ करदिया फिर थोड़े दिन वहां रहके मैंने अपने देश को आने के लिये बिदा मांगी तब बादशाह ने बहुत साधन देके मुझे बिदा किया और कितनी एक परी साथ करदीं उन्होंने उड़न खटोला पर बैठाल के एक क्षणा मात्र में मेरे नगर में ला बैठाया हे पथिक वह सुंदरी यही है जो तेरे सन्मुख लोहेकी जंजीर में बंधी है बस अबतो तेरे सामने सम्पूर्ण इत्तान्त कह सुनाया इस लिये तुझेभी उचितहै कि मेरे पास आ तो मैं तेरा शीश काटूं तब शाहज़ादेने कहाकि अभीतो मेरा संतोष नहींहुआ क्योंकि आपही निर्णय कीजिये कि भला मेरे चित्त संतोषार्थ को इतना इत्तान्त दी-कहै हां अब दया करके यहतो बताइये कि कौन ऐसा।

अपराध गुलमे हुआ कि जिसके पलटे इसके लिये यह दराड नियत किया है कि पांवों में बेड़ी डालके यह दुर्गति करते हो॥

ग्यारहवीं कहानी

गुलकी दुष्टता सनोवर शाहके साथ उसके बदले दराड पाने और इलमास रूह बरदश को महरंगे-ज़ मिलने के विषय में॥

तब सनोवर शाहने कहा कि हे पथिक अब तुझ से गुलकी दुष्टता का वृत्तान्त कहताहूं तू कान लगाके सुन कि एक रातका यह वृत्तान्त है कि शयना गारमें मैं और यह सुन्दरी जिसका नाम गुलहै एकही पलंगपर दोनों सो रहे थे इतने में मेरी आंख जो खुली तो इसके हाथ पांव पालेसे भी अधिक ठंढे लगे तब मैंने जाना कि कोई रोग इस प्रकार का होगया कि जिसके कारण इसके हाथ पांव ऐसे ठंढे हो गये हैं तब मैंने पूंछा कि हे सुन्दरी तेरे हाथ पांव शीतल होने का क्या कारण है तब उसने कहा कि मैं बाहेर भूमि को गई थी इससे हाथ पांव धोये हैं यही ठंढे होनेका कारण है मैं उत्तर पाके चुपहोरहा और इसकी बात सत्य मानी कितेक दिन बीतेफिर एक दिन वही दशादेखी तो उसदिन भी इसने वही उत्तर दिया परंतु मेरे मनमें चोर बस गया कि निस्संदेह यह रातको कहीं जाती है परंतु इसबातको मैंने अपने मनहीं में रक्खा किसहेतु से कि जोमैं इसबातको प्रकट करूं और झूंठ ठहरे तो हंसीही हो सो हे पथिक इसके निर्णय के लिये प्रथम तो मैं अपनी घुड़शाल में गया तो क्या देखताहूं कि जो मेरे निजके घोड़े थे वे ऐसे शीघ्रगामी थे कि वायु उनके पीछे पड़ी रहा

करतीथी सो ऐसे तन क्षीण और बलहीन हो गयेहैं कि अपनी ठौरसे चलना भी अति दुस्तर है और कितनों की पीठ। लग गई हैं तब मैंने अश्वपों को बुलवाके बहुतोंकोतो केवल आंखही दिखाई और बहुतों को कठिन दण्ड दिया तब उनमें से एकने मारे डरके कहाकि हे पृथ्वी नाथ जो जीव। दान पाऊं तो कुछ एकान्त में कहूं मैंने कहा कि मैं तुझको जीव दान दिया परंतु सत्य २ बता तब उसने कहा कि महाराज। रातके समय पटरानी जिसका नाम गुलहै शृंगार कर घुड़शालमें आ आपके घोड़े पर सवार होके कहींजातीहै और थोड़ी सी रात रहे फिरके आतीहै और घोड़ा घुड़शालमें छोड़ महल में चली जातीहै हे पथिक मैंने ज्योंहीं उससे यह बात सुनी। त्योंहीं चित्तबुद्धि हरगई पर यह भेद जानने के कारण मैंने उस अश्वप से कहा कि आज एक घोड़ा और तैयार रखियो निदान ज्योंहीं रात हुई त्योंहीं मैंने कुछ थोड़ा बहुत भोजनकर अपनी खाटली तिस पीछे यहभी आके मेरे निकट सो रही और छलसानी प्रीति दिखाय के बोली कि मुझे तो नीदने आज अभी से सताया है और मैंभी जान बूझके सोतोंकी भांति स्वास लेने लगा जब इसने जाना कि यह सो रहा तब यथा पूर्वक मेरे पास से उठ दांतों में मिस्सी मल। आभूषण पहिन और नवीन वस्त्रधारण कर बाहर निकली मैंभी दबे पांव इसके पीछे २ निकला यह घुड़शालमें। आके घोड़ेपर सवार होके चली तब मैंने शोचा कि जोमैं घोड़े पर सवार होके इसके पीछे चलूं और इसको घोड़े की टापकी आहट मालूम हो जाय तो सचेत हो जायगी तब यह

भेद कैसे खुलेगा इसलिये कमर कसके पैदलही इसके पी-
छे २ चला और यह जो कुत्ता जिसके गलेमें तू जड़ाऊ तौंक
देखता है मेरे साथही था जब थोड़ी सी दूरपै एक मैदानमें
ये जंगी जो मेरे सामने खड़े हैं मकान बना के रहतेथे जब
यह वहाँ पहुंची तब घोड़े से उतर जंगियों के घर में गई उन्हों
ने इसको घरके बाहर निकाल दिया और कोड़ा लेके निक-
ले और इस हत भाग्यको मारते २ देहीं पिलपिली करदी य-
ह देखके मैंने जाना कि अब गुल मरगई क्योंकि मैंने तो फू-
लकीभी छड़ी से गुल को कभी नहीं मारीहै और अब इसपै।
इतनी मार पड़ी है पर इसकीतो देहमें उन जंगियों की प्रीति
का मदभरा था इसने चूंभी न किया और उलटी उनके पावों
पड़ने लगी अन्तको उन्होंने पूंछा कि आज देर को क्यों आई
तब इसने उत्तर दिया कि आज बादशाह हत भाग्य देर त-
क जागतारहा इसीसे आनेमें देरी हुई नहींतो तभी आई
होती यह देख के हे पथिक मुझे बड़ा आश्चर्य्य हुआ क्यों-
कि मैंने तो गुलको कभी फूल सेभी नहीं मारा है अब इसने
ऐसी कठिन मार कैसे सही है अंतको जंगी गुलका हाथप-
कड़ घरमें ले जाय इसके साथ भोग बिलास करने लगे य-
ह दशा देख मेरा शरीर मारे क्रोधके भस्म होने लगा और
आंखोंसे ज्वाला प्रकट होने लगी तबमैं अधीर होके उनके
घरमें घुसगया मुझे देखतेही जंगियों ने चारों ओर से टी-
ड़ी दलसमान घेर लिया परमैं अपनी मनुसाई और साम-
र्थ्य के भरोसे पै उस झुंड में जाने से तनक भी भय मनमें न
धरी और उनसे युद्ध करने लगा जब उन्होंने देखा कि हम।

इससे जीत नहीं सक्ते तो वे लोग हटे और चारों ओर से भाग-
ने लगे और यह जंगी जिसको तू हाथ पांव बंधे देखता है मेरे
हाथ से बन्दि में आया जिस समय मैं इसको बांधने के विचार में
था कि इतने में यह गुल आपदा की मूर्ति पीछे से आई और मु-
झे ऐसे बलसे धक्का मारा कि मैं पृथ्वी पर गिर पड़ा उस सम-
य यह जंगी सावकाश पाके मेरे ऊपर चढ़ बैठा और इस नि-
र्लज्जने अपनी कमर से छुरी निकाल के इस जंगी को देक-
र मेरे मारने को सयन किया उस समय मैं अपने जीने से हा-
थ धोबैठा पर ईश्वरसे प्रार्त्थना करता था कि इतने में इस।
जंगी ने चाहा कि मेरी नाड़पर छुरी रेतके बिदाई देय त्योंहीं
इस कुत्तेने जिसको तू ऐसी प्रतिष्ठा से देखता है पीछे से आ-
के इस जंगी का गला पकड़ लिया उस समय मैं सावकाश पा-
के नीचेसे निकल इस जंगी की मुसकें चढ़ाईं और उसी के सा-
थ गुलको क़ैद करके ले आया और चार जंगी जो मेरे भय से।
भागे थे उनमेंसे तीनको तो पकड़ लाया पर एक भागके मह-
रंगेज़ नामक जो शाहकैमूस की बेटी है उसके तख़्त के नीचे।
छिपा है अबहे पथिक मैंने तेरे सामने सम्पूर्ण वृत्तान्त आद्यो
पान्त कह सुनाया इसलिये तुझेभी उचित है कि तूभी अपने
वचन का प्रति पालन कर तब शाहज़ादे ने कहा कि जो आप।
मेरे मारने पै उद्यत हैं तो प्रथम यह तो बताइये कि वह जंगी
जो भाग कर यहां से गया है उसको महरंगेज़ ने किसवास्ते अ-
पने तख़्त के नीचे छिपा रक्खा है इसका ब्योरा भी मुझे पहिले
बतादीजिये तो मुझे बध कीजिये नहीं तो मेरी वृथा हत्या आ-
पके माथे होगी तो अंत के दिन परमेश्वर के आगे क्या उत्तर

होगे बादशाह तो कुछ हाल महरंगेज़ का जान्ताही न था इस लिये चुपहो रहा और शाहज़ादे के वध करने से हाथ उठाया तब शाहज़ादे की बुद्धिमानी की प्रशंसा करने लगा कि धन्य तुझको और तेरी माता को कि तूने कैसी २ चतुराई से अपना जीव बचाया निदान जब शाहज़ादा ऐसी २ कठिनतासे शाह सनोवर से सम्पूर्ण वृत्तान्त पूँछ अपनी जान बचाया तब परमेश्वर का धन्यवाद कर बादशाह का जयजयकार मनाने लगा फिर थोड़े दिन बादशाह की सेवा में रह वहां से जन्म भूमि को आनेका विचार कर एक दिन नदी के तटपर आय स्नान कर सीमुर्ग़ का पंख जो उसके पास था आगपर धरा त्योंहीं सीमुर्ग़ जो उसका हित था आ पहुंचा तब शाहज़ादे ने कितने एक जीवोंको मार यथा पूर्वक खाने पीने की सामा इकट्ठी करके सीमुर्ग़ पर सवार हुआ और सातों महानदों को उतर कर सीमुर्ग़ के मकान पर आ पहुंचा फिर कुछ दिन सीमुर्ग के घर निवास कर वहां से विदाहो जंगियों के कोटमें आया और वहां से जंगियों के बादशाह की बेटी को सम्पूर्ण द्रव्य सहित लेके उसबन में जहां सिंह से मिलाप हुआथा यथा पूर्वक उससे भी मिला ॥

बारहवीं कहानी

जमीलारवादं के मकान पर पहुंच उसको साथ ले लतीफ़ा वानूके दराड देनेकी मति से आने और महरंगेज़ के प्रश्नका उत्तर देनेके विषय में ॥

लेखक यों लिखता है कि जब शाहज़ादा जमीलारवादं के मकान के निकट पहुंचा तब जमीलारवादं शाहज़ादे के

आनेके समाचार पाय उसको आगे लेने आई और शाहज़ादे को साथलेके बाग़में आजैसी पहुनाई करना उचित था सो किया और शाहज़ादे ने अपने कहनेके अनुसार उसके साथ बिवाह कर कुछदिन भोग बिलास करके फिरजमीलारवातूं को साथले लतीफ़ावानू के नगरकी राहली थोड़ीही अवधिमें अपनी सेना सहित लतीफावानू के बाग़में पाटम्बरी। तम्बू जो खड़ाकिया तब कितने एक बीरों को आज्ञादी कि लतीफ़ावानू की सुसक चढ़ाय के सन्मुख लावें बीर लोग आज्ञानुसार उसको शाहज़ादे के सन्मुख लाये उस समय शाहज़ादे का बिचार था कि इसकी खाल खींचके भुसभर वाना। चाहिये अथवा इसको बध करके इसका मांस कुत्ता और चीलोंको लुटाना चाहिये परंतु जमीलारवातूं जो उसकी बहन। थी उसनेउसके निर्दय अपराधकी क्षमा माँगी तब शाहज़ादेने उसके कहनेसे उसका अपराधक्षमा किया और महम्मदी धर्म्मका उपदेश कर जादूकी बिद्या छुड़ाई और जितने मनुष्य उसने अपनी माया के बलसे हिरण बनारक्खे। थे उनको यथा पूर्ब्बक मनुष्य बनाया और उनको कपड़ा बनवाय राहका खर्च देके बिदाकिया वे सब जयजय कार मनाते निज २ देशको सिधारे तिस पीछे लतीफ़ावानू को वहां छोड़ महरंगेज़ के देश की राहली एक मास पीछे कैमूस शाहके शहर में आपहुंचा और शहरके बाहर तम्बू खड़ा कर जमीलारवातूं आदि को वहां छोड़ के आप महरंगेज़ के प्रश्नका उत्तर देने के बिचार से उसके द्वारपर जा नगारा बजाया चट द्वारपालक शाहज़ादे को महरंगेज़ के पिता के पास ले गये तो बाद-

शाह ने बहुत समझाया कि हे जवान तू इस कठिन काम को मत कर क्योंकि आजतक कोई उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका इसीसे अनेक राजकुमार उसके हाथसे मारेगये और मुझे लरवाई देताहै कि तेरीभी मृत्यु शीशपर नाचीहै इसीसे तू उसके प्रश्नका उत्तर देने को आयाहै तब शाहज़ादे ने कहा हे बादशाह आजतक उस भेदको जो तेरी बेटी पूंछती है कोई नहींजान्ताथा अब मैं केवल उसीके उत्तर देने के लिये आयाहूं जब समाचार यह महरंगोज़ को पहुंचा तब उसने शाहज़ादे को बुलाया शाहज़ादे ने कहा कि हे महरंगोज़ तेरा प्रश्न काहै उसने कहाकि बतावो गुलने सनोवर के साथ क्या किया तब शाहज़ादे ने कहा कि हे महरंगोज़ जो गुलने किया उसका बदला भली भांति पाया और तूभी उसी भांति पछतायगी यह सुन्तेही उसके मनमें चोर बसि गया परंतु लाज छोड़ इसकहानी के सुनने की अभिलाष से ढिठाई सेबोली किहे शाहज़ादे जब तक तू सम्पूर्ण इत्तान्त आद्योपान्तनकह सुनावेगा तब तक मैं नहीं मानूंगी जब शाहज़ादे ने देखा कि यह निर्लज्ज अपने अपराध को नहीं मान्ती इथा बाद किये जाती है तब शाहज़ादे ने कहा कि हे महरंगोज़ जो तेरे मनमें इस कहानी के सुन्ने की अभिलाष है तो अपने पिताकोभी सभा सदों सहित बुलवातो सभाके सन्मुख सम्पूर्ण कहानी कह सुनाऊं महरंगोज़ ने वैसाही किया जब बादशाह अपने सभा सदों सहित आके वहां शोभित हुआ तब शाहज़ादे ने कहा कि हे महरंगोज़ अभी तेरा कुछ नहीं बिगड़ा क्योंकि जब तेरे प्रश्नका उत्तर दूंगा सो मेरे

मन आवेगी सो तेरी गति करूंगा महरंगेज़ ने अपने बाप के सामने यहभी मानी तब शाहज़ादे ने कहा कि हे सभा। सदो आजतक इस भेदको कोई नहीं जान्ताथा परंतु अब मैं तुम्हारे सामने कहताहूं परंतु तुमइससे इतनी बात पूँछो कि इसने यह बात कहां से सुनीहै कि जिसके लिये अनेक राज कुमारोंको बध किया है सभा सदों ने जब यह बात पूँछी तबइसके प्रति उत्तर में उसने मौन साधी तब शाहज़ादेने कहा कि हे महरंगेज़ मैं गुल सनोवर का सम्पूर्ण वृत्तान्त जान्ताहूं परंतु तुझे इसके सत्य असत्य का निश्चय कैसे होगा इसलिये जिससे तैने सुनाहै उसको बुलाके यहां बैठाल जिस्में वह मेरे और तेरे बीच में साक्षी हो तब महरंगेज़ ने कहा कि मैनेतो यह एक पथिक से सुनाहै अब मैं उसको कहांसे लाऊं यह सुन शाहज़ादे ने क्रोधकरके कहा कि जो मैं उस पथिक को लेके बैठालदूं तो क्याहोवे महरंगेज़ ने कहा कि इससे और कौन बात उत्तम है तब शाहज़ादेने कैमूस शाहका हाथ पकड़ कर महरंगेज़ के तख़्त के पास लाय खड़ा किया और उस तख़्त के हटाने की आज्ञादी उस सिंहासन के उठातेही वह जंगी जो उसने छिपाय रक्खाथा निकल आया शाहज़ादे ने उसको बांध लिया और कैमूस शाह यह देख अपने सभासदों सहित मारे। लाज़के पसीने मेंडूब गया परंतु महरंगेज़ निर्लज्जता की। चादर ओढ़ ढिठाई का घूंघट काढ़ बैठी सभा मध्य में वही बात करती रही थी कि (बादी भइंन पश्यति) अर्थात् अपने हठसे कहेजाती थी कि गुलने सनोवर के साथ क्या।

किया तब शाहज़ादे ने कहा कि बड़े आश्चर्य्य की बातहै कि तेरी आँखों में तनक भी लाज नहींहै तब हार कर शाहज़ादे ने जंगी को सभा में बैठाल कर सम्पूर्ण वृत्तान्त गुल के पाने और जो जो दुष्टता गुलने सनोवर शाह के। साथ किया सो और जो सनोवर शाहने उसकी दुष्टता के पलटे में दराड दिया और जिस कठिनता से शाहज़ादा शहर वाकाफ़ में पहुंचा और जैसे उसकी सेवामें गया सो सब आद्योपान्त कह सुनाया तब उस जंगी ने कहा कि हे शाहज़ादे तैने बहुत ही ठीक कहा है इसमें कुछभी। झूंठ नहीं है तब शाह कैसूस ने शाहज़ादे की बुद्धिमानी और मनुसाई की अधिक २ प्रशंसा की और शाहज़ादाभी बादशाह की दया अपने ऊपर देखके प्रसन्न हुआ तब शाह कैसूस ने अपनी बेटी का उसी समय शाहज़ादे को हाथ पकड़ा दिया॥

तेरहवीं कहानी

महरंगेज़ सहित शाहज़ादे का देशको आना और अपने बापसे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहके जंगी को दराड दे महरंगेज़ के साथ बिवाह करने के बिषयमें॥

निदान शाहज़ादा थोड़े दिन वहां रह स्वसुर जामात्र। के नाते की रीति भांति से बुद्दी पाय कैसूस शाह से बिदा होउस हबशी सहित महरंगेज़ और जमीलारवाद को। लेके अपने देशको चलता भया और थोड़ेही दिनों में। ईश्वर की दया से अपने नगर में आपहुंचा तब यह शुभ।

समाचार बादशाह लाल पोश अर्थात् शाहज़ादे इल।
मास रूह बरक़ा के पिताने सुने तब उसकी बिपत्ति निशा
शिरानी और आनन्द रूपी सूर्य्योदय हुआ और जिनके
उसकी बिरह में नयन मेघ समान बर्षे ते थे उनको यह
शुभ सन्देश अगास्त के समान हुआ और जो उसके बि-
रह में तन हीरा मन मलीन रहते थे तिनके प्राणों को
यथा सुधा समान प्राप्त हुआ और सम्पूरण नगर में आन-
न्द बधाई बाजी घर २ मंगल चार होने लगे और बादशा-
ह ने ऐसा पुराय किया कि दीनअनी और याचक अयाचक हो
गये जब शाहज़ादा बादशाह के पास गया तब यद्यपि बाद-
शाह एक तो वृद्ध दूसरे पुत्रकी बिरह के कारण ऐसा बल।
हीन था कि उठने की भी सामर्थ्य न थी तद्यपि पुत्रको देख
डगमगाते हुये उठके शाहज़ादे को छातीसे लगा के बहुतरो
दन करने और बार बार गात चूमने लगा तब शाहज़ादे
ने अपने पिताको दण्डवत कर बहु प्रकार दर्शन कर चि-
त्त संतुष्ट किया और बादशाह जो रोते २ अन्धा हो गया था
सो शाहज़ादे ने सुर्मा सी सुर्ग़ी का पास वाला आंखों में लगा-
या तत्काल दृष्टि यथा पूर्ब्बक होगई और सत्य तो यों है
कि पुत्रही माता पिता के नेत्र हैं फिर शाहज़ादे ने सम्पूरण।
वृत्तान्त लतीफा वानू की माया का करना और जमीला।
खातूं की प्रीति का और जंगियों का युद्ध सी सुर्ग़ी की सहा
यता सिंहकी मित्रता शहर वा काफ़ में जाके सनोवर शा-
ह की सेवा में पहुंच के गुल सनोवर की कहानी जाननी फिर
वहां से आके महरंगेज़ के पिताको सभा मध्य में लज्जित

कर महरंगेज़ के लाने का आद्योपान्त सब वृत्तान्त कह सु-
नाया तब बादशाह शाहज़ादे की बुद्धिमानी और बीरता
की बड़ाई करने लगा फिर शाहज़ादे ने महरंगेज़ के हा-
थ पांव बांध के बादशाह के आगे लाके कहा कि इस
कुटिलने आपके पुत्रोंको बध किया है सो आप इसको।
जिस प्रकार चाहिये दराड देके बध कीजिये तब बादशा-
ह ने देखा कि मृतक पुत्र तो अब इसके बध करने से फि-
र न आवैंगे और यह इसको कितनी बिपत्ति भोग के ला-
या है जो मैं कोई दराड इसको करूं तो शाहज़ादे के मनको
उदासी होगी इस बिचार से बादशाह ने कहा कि यह तेरा
माल है किस हेतु से कि सदा किसी का समय एकसा न-
हीं रहता तब शाहज़ादे ने चार घोड़े घुड़शाल से मँगवाये
और उस जंगी को चार खूंटों में बंधवाके कोड़ों से पिटवा-
या जब उसके देहकी खाल उड़ गई तब घोडों की टापों के
नीचे खुंदवाया जब महरंगेज़ ने यह दशा हबशी की देखी
तो मारे डरके कांपने लगी कि अब यह मुझे भी सजीव न।
छोड़ेगा तब महरंगेज़ ने यह बात अपनी बुद्धिमानी से ब-
नाके कही कि हे शाहज़ादे जिस बस्तु को मनुष्य बहुत सी
बिपत्ति भोग के लावे तो उसको उचित है कि उसको हित क-
र रक्खे और जो तुम्हारे भाई और जितने अन्य पुरुष मेरे हा-
थ से बध हुये इसको केवल ईश्वर की इच्छा जानना चा-
हिये और जो ऐसा न होता तो भला तुम उस ठौर कैसे प-
हुंचते और यह किसकी सामर्थ्य थी जो इस जंगी को मेरे
तख़्त के नीचे से निकालता और मेरा हाथ पकड़ लेता और

जो तुम्हारे मन में मेरी भ्रष्टता के बिषय में कुछ सन्देहहो सो सब भांति अपने मनको समाधान कर लेव यह सुन शाहज़ादे ने जाना कि यह डरती भी है और उसकी बुद्धिमानी से प्रसन्न होके उसके अपराध को क्षमा किया और एक दिन शुभ मुहूर्त देखके महरंगेज़ के साथ बिवाहकर अपनी आयुके शेष दिन उसके साथ आनन्दसे बिताये॥

इति

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
मनोहरलहरी	अवध यात्रा	वैद्यकभाषा	ज्योतिष
गंगा लहरी	भरतरी गीत	निघंट	मुहूर्त्त गणपति
यमुना लहरी	दानलीला वनाग	अमरविनोद	मुहूर्त्त चक्र दीपिका
जगद्विनोद	लीला	वैद्यजीवन	मुहूर्त्त चिंतामणि स
शृंगार बत्तीसी	गोकर्णमाहात्म्य	औषधिसंग्रहक	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड स·
रागा	दोहावली वरत्ना·	ल्पवल्ली	मुहूर्त्त दीपक
राग प्रकाश	वली	अमृतसागर वल्ली	बृहज्ज्ञातक स·
लावनी	श्रीगोपालसहस्र·	वैद्यमनोत्सव	जातकालंकार स·
किस्सा वगैरह	नाम	ज्योतिषभाषा	जातकाभरण
नानार्थनो संग्रहा·	कथा सत्यनारायण	जातक चन्द्रिका	होरामकरंद
वली	हनुमान बाहुक	जातकालंकार	संस्कृत उट्टी·स·
ब्रह्मसार	जनक पच्चीसी	देवज्ञाभरण	मनुस्मृति
शिवसिंहसरोज	हरिहरसगुणनि	ज्ञानस्वरोदय	विष्णुहारीत
भक्तमाल	र्गुण पदावली	रमलसार	महिम्न स्तोत्र
इन्द्रसभा	बनयात्रा	इन्द्रजाल	व्रतार्क
विक्रमविलास	कायस्थवर्णनिरू	संस्कृतकीपुस्तकें	याज्ञवल्क्य स्मृति
बेताल पच्चीसी	पण	लघुकौमुदी	संस्कृत भा·टी·स·
पद्मावतीखंड·	बिहारबिन्द्रावन	सिद्धान्त चन्द्रिका	अमरकोश
शुक बहत्तरी	समरबिहारविद्रावन	अमरकोषतीनों का	याज्ञवल्क्य स्मृति
बकावली सुमन	कल्पभाष्य	इसटीक	सन्ध्या पद्धति
चहारदरवेश	सौदागरलीला	पंचमहायन्त्र	व्रतार्क
किस्सा हातमताई	रामकलेवा	निर्णयसिन्धु	भगवद्गीताटी·हु·वे
अपूर्व कथा	दरसी	संग्रहशिरोमणि	भगवद्गीताटी·अ·गि·
सहस्र रजनी चरित्र	अक्षरावली	भगवद्गीता सटीक	गीतगोविंद
सिंहासन बत्तीसी	स्वयम्बोध	दुर्गापाठ सटीक	कथा सत्यनारायण
राबिन्सन का इतिहास	ज्ञान चालीसी	विष्णु भागवत	परमार्थसार
सीताहरण	दोहावली	अपराधभंजनस्तो·	शार्ङ्गधरसंहिता
सतीविलास	बालाबोध	दुर्गास्तोत्र	पाराशरी
रामविवाहोत्सव	विद्यार्थी की प्रथ·	कायस्थकुलभास्कर	शीघ्रबोध
मुतफ़र्क़ात॥	म पुस्तक	कायस्थधर्म्मनिरू·	लघुजातक
अनिश्वर की कथा	किताबजंत्री	पण	षट्पंचाशिका
ज्ञानमाला	गणित कामधेनु	तथा छोटा	पंचरत्न
गोपीचंद भरतरी	लीलावती	मथुरासभा	सामुद्रिक
कथा श्री गंगा जी	पटवारियोंकी पु·स्त·	तुलसीतत्वभास्कर	कालिंजर माहात्म्य

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
सर्विशेतालीमकी	तथा २ भाग	पशुचिकित्सा	दरोग़ह
पुस्तकें	तथा ३ भाग	पढ़ाबरवतकैथी	ऐक्टस्टाम्य दस्ता-
संस्कृत	अवधदेशीयभूगोल	तथा क़बूलियत	बेज़ात सन् १८६८
ऋजुपाठ १भा-२व३	इंग्लिस्तानकाइ-	रजिस्टरदारिवल	ईसवी
धात्वर्णव	तिहास	खारिज नुलबाम	ऐक्टताल्लुक़दारान्
नागरीकैथी	हितोपदिका	दर्सा	मक़रूज़ अवध २४
वर्णमालाकैथी	बालाभूषण	रजिस्टरहाज़िरी	सन् १८७० ई०
१ भाग व २ भाग	पद्यसंग्रह	पाठशाला	ऐक्टचोपायों का
तथाकैथीफ़ारसी	भाषाकाव्यसंग्रह	क़ानूनकैथी	भदारख़लत बेजा
नागरी	कवित्तरत्नाकर १भा-	पटवारियोंकेक़ाय	२ सन् १८७७
हरूफ़ मुफ़र्दात	तथा २ भाग	देउर्दूकैथीमहाजनी	ईसवी
अक्षरारम्भ	मंगलकोश	टिकटकेलाइसन्स	ऐक्टमज़मूआज़ा-
वर्णप्रकाशिका	अंकप्रकाश	का ऐक्ट २ सन्	बिता फ़ौजदारी १०
१ भाग व २ भाग	गणितप्रकाश १भा-	१८७८ ई०	सन् १८७२ ई०
सूरजपुरकीकहानी	तथा २ व ३ व ४ भा-	नागरी	ऐक्टमालगुज़ारी
धर्मसिंहकावृत्तांत	गणितक्रिया	ऐक्टलगानमग़रबी	मग़रबीव शिमा-
शिक्षावली	क्षेत्रप्रकाश	व शिमाली १०	ली १८ सन् १८७३
शिशुबोध	क्षेत्रचन्द्रिका २भा-	सन् १८५८ ई०	ईसवी
पत्रहितैषिणी	सकीलदायरा	इंडियनपिनलको-	तरमीम मज़मूआ
पत्रदीपिका	रेखागणित १भा-	ड मज़मूआज़ाबि-	ज़ाबिताफ़ौजदारी
विद्याचक्र	तथा २ भाग	ता फ़ौजदारी—	११ सन् १८७४
विद्यांकुर	बीजगणित १भाग	ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०	ईसवी
पदार्थविद्यासार	तथा २ भाग	ऐक्टरजिस्टरी २०	नक़ावीकेक़ायदे
पदार्थज्ञानविटप	रामायणतुलसीकृ-	सन् १८६६ ई०	सवालवजवाब
भोजप्रबन्धसार	बालकांड	ऐक्टस्टाम्य १सन्	पुलिस
राजनीति	अयोध्याकांड	१८६२ ई०	अवधरुहेलखंड
भाषालघुव्याक-	आरण्यकांड	ऐक्टस्टाम्य अदा-	रेलवेकादस्तूरुल्
रण १भा व २	किष्किन्धाकांड	लत २६ सन् —	अमल
भाषातत्वदीपिका	सुन्दरकांड	१८६७ ई०	जो पुस्तकऊपरहीं
भाषाचन्द्रोदय	लंकाकांड	मज़मूआ ऐक्ट अ-	हैं उनकेनाम
भूगोलतत्व	उत्तरकांड	वधलगान १८	शंकरचरित सुधा
भूगोलदर्पण	गुटका १भा-२व३	सन् १८६८ ई०	कथा उपदेश
इतिहासतिमिर-	हिदायतनामा मु-	पुरन्नादारी २६	इति
नाशक १भाग	र्रिसान्	सन् १८६६ ई०	

